Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 46-47

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12-19 रबीय्युल सानी 1442 हिज्री कमरी 18-25 नबुव्वत 1400 हिज्री शम्सी 18-25 नवम्बर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

मज़लूम की बद्दुआ से बचना क्योंकि उसके और अल्लाह के मध्य कोई रोक नहीं

(1495) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गोश्त लाया गया वह बरीरह रज़ियल्लाहु अन्हु को सदके में दिया गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह उस के लिए तो सदक़ा है और हमारे लिए भेंट।

(1496) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत माज़ बिन हबल रज़ियल्लाहु अन्हु से जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको यमन की तरफ़ भेजा, फ़रमाया तुम ऐसी क़ौम के पास जाओगे जो योग्य-ए-किताब हैं जब उनके पास पहुँचो तो उन्हें इस बात की दावत देना कि वे गवाही दें कि अल्लाह तअला के सिवा कोई भी उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं। यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो फिर उन्हें यह बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर रात-दिन में पाँच नमाज़ें निर्धारित की हैं। यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो फिर उनको बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर सदक़ा (ज़कात) भी फ़र्ज़ किया है जो उनके मालदारों से लिया जाएगा और उनके मुहताजों को दिया जाएगा। यदि वे तुम्हारी यह बात मान लें तो ख़्याल रखना उनके उम्दा मालों को न लेना और मज़लूम की बद्दुआ से बचना क्योंकि उसके और अल्लाह के मध्य कोई रोक नहीं।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

मैं सच्च सच्च कहता हूं कि कुधारणा बहुत ही बुरी बला है इन्सान के ईमान को तबाह कर देती है और सच्चाई और रास्ती से दूर फेंक देती है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कुधारणा सच्चाई की जड़ काटने वाली चीज़ है

यह ख़ूब याद रखो कि सारी ख़राबियां और बुराईयां कुधारणा से पैदा होती हैं। इसी लिए अल्लाह तआला ने इससे बहुत मना किया है और फ़रमाया اِنَّ بَعۡضَ الظَّنِّ اِثۡمٌ (अल हुजरात:13) यदि मौलवी हम से बदज़नी न करते और सच्चाई और दृढ़ता के साथ आकर हमारी बातें सुनते,हमारी किताबें पढ़ते और हमारे पास रह कर हमारे हालात को देखते तो वे आरोप जो हम पर लगाते हैं न लगाते। परन्तु जब उन्होंने ख़ुदा तआला के इस आदेश की महानता न की और इस पर अनुकरण न किया तो इस का परिणाम यह हुआ कि मुझ पर कुधारणा की और मेरी जमाअत पर भी कुधारणा की और झूटे इल्ज़ाम और आरोप लगाने शुरू कर दिए। यहां तक कि कई ने बड़ी बेबाकी से लिख दिया कि यह तो नास्तिकों का गिरोह है। नमाज़ें नहीं पढ़ते। रोज़े नहीं रखते। इत्यादि इत्यादि। अब यदि वे इस कुधारणा से बचते तो उनको झूट की लानत के नीचे न आना पड़ता वे इससे बच जाते। मैं सच सच कहता हूँ कि यह कुधारणा बहुत ही बुरी बला है इन्सान के ईमान को तबाह कर देती है और सच्चाई और रास्ती से दूर फेंक देती है। दोस्तों को दुश्मन बना देती है। सिद्दीक़ों के कमाल को प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि इन्सान कुधारणा से बहुत ही बचे। और यदि किसी के बारे में कोई कुधारणा पैदा हो तो बहुत अधिक इस्तिग़फ़ार करे और ख़ुदा तआला से दुआएं करे ताकि इस पाप और इसके बुरे परिणाम से बच जाए जो इस कुधारणा के पीछे आने वाला है। इस को कभी मामूली चीज़ नहीं समझना चाहिए। यह बहुत ही ख़तरनाक बीमारी है जिससे इन्सान बहुत शीघ्र हलाक हो जाता है।

अत: कुधारणा इन्सान को तबाह कर देती है। यहां तक कि जब दोज़ख़ी जहन्नुम में डाले जाएंगे तो अल्लाह तआला उनको यही फ़रमाएगा कि तुम्हारा यह गुनाह है कि तुमने अल्लाह तआला पर कुधारणा की। कई लोग इस प्रकार के भी हैं जो ये समझते हैं कि अल्लाह तआला गुनाह करने वालों को माफ़ कर देगा और नेक काम करने वालों को अज़ाब करेगा। यह भी ख़ुदा तआला पर कुधारणा है। इस लिए कि इस की विशेषता न्याय के विरुद्ध करना है। और नेकी और इसके परिणामों को जो क़ुरआन शरीफ़ में उसने निर्धारित फ़रमाए हैं,बिलकुल नष्ट कर देना और व्यर्थ ठहराना है। अत: याद रखो कि कुधारणा का परिणाम जहन्नुम है। इस को साधारण बीमारी न समझो। कुधारणा से निराशा और निराशा से जुर्म और जुर्म से जहन्नुम मिलता है। और यह सच्चाई की जड़ काटने वाली चीज़ है। इस लिए तुम इससे बचोगे और सिद्दीक़ के कमालों को प्राप्त करने के लिए दुआएं करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 336 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

सूर: फ़ातिहा क़ुरआन-ए-करीम की कुव्वतों और ताक़तों का निचोड़ है हैं तो ये सात संक्षिप्त आयात लेकिन सारे क़ुरआन-ए-करीम के अर्थ संक्षिप्त में इस में आ गए हैं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर: अल्हिजर आयत : 88 وَلَقَدۡ اٰتَيۡنٰكَ سَبۡعًا مِّنَ الۡمَثَانِيۡ وَالۡقُرۡاٰنَ الۡعَظِيۡمَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

फ़रमाया हम ने तुम को सूर: फ़ातिहा जैसी नेअमत दी है जो केवल सात आयात हैं और मसानी हैं। मसानी के अर्थ जैसा कि शब्दकोश में बताए जा चुके हैं किसी वस्तु की क़ुव्वत और ताक़त के भी होते हैं और सूर: फ़ातिहा को मसानी कह कर यह बताया है कि इस में क़ुरआन-ए-करीम की कुव्वतों और ताक़तों का निचोड़ है अर्थात हैं तो सात संक्षिप्त आयात लेकिन सारे क़ुरआन-ए-करीम के अर्थ संक्षिप्त में इस में आ गए हैं।

क़ुरआन-ए-अज़ीम से मुराद बकिया क़ुरआन भी हो सकता है और मुराद यह होगी कि सूर: फ़ातिहा भी दी जो संक्षिप्त क़ुरआन है और तफ़सीली क़ुरआन भी दिया और इस से मुराद ख़ुद सूर: फ़ातिहा भी हो सकती है। इस सूरत में इस से यह मतलब होगा कि संक्षिप्त क़ुरआन-ए-करीम का एक बड़ा महान हिस्सा है और क़ुरआन से सारा क़ुरआन नहीं बल्कि हिस्सा क़ुरआन मुराद लिया जाएगा और यह आम मुहावरा है कि कभी जुज़ु के लिए कल का शब्द बोल दिया जाता है जैसे आम तौर पर लोग कहते हैं क़ुरआन सुनाओ और इस से मुराद सारा क़ुरआन सुनाना नहीं होता बल्कि उस का कुछ हिस्सा सुनाना मतलूब होता है। अत: الۡقُرۡاٰنَ الۡعَظِيۡمَ का शब्द सूर: फ़ातिहा के सम्बन्ध में इस इज़हार के

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है

(क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत क़ादियान (भाग-2)

(आरोप नंबर 3) एतिराज़ करने वाले ने तहरीर किया है कि कई किताबें क़ुरआन-ए-मजीद की सूरत में लिखी गई थीं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन समस्त मुसहफ़ों (जिन पन्नो में क़ुरआन-ए-मजीद लिखा गया तहस) को जलाने का हुक्म दिया और अपना क़ुरआन-ए-मजीद जारी किया जो आज तक पढ़ा जाता है।

उत्तर : यह आरोप ग़लत और बे-बुनियाद है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना क़ुरआन-ए-मजीद जारी किया। इस की मज़ीद तफ़सील यह है कि (1) हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त सन् 11 हिज्री ता 13 हिज्री (के अनुसार 632 ता 634 ई. तक तक़रीबन दो वर्ष रहा (2) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त सन् 13 हिज्री ता 24 हिज्री (के अनुसार 634 ई. ता 645 ई. तक तक़रीबन ग्यारह बारह वर्ष रहा।

(3) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त सन् 24 हिज्री से 35 हिज्री (के अनुसार 645 ई. ता 656 ई. तक़रीबन ग्यारह वर्ष रहा 4) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना ख़िलाफ़त 35 हिज्री से 40 हिज्री के अनुसार 656 ई. से 660 ई. चार या पाँच साल रहा।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त लगभग 13 वर्ष रहा। इन तेरह सालों में हज़ारों हुफ़्फ़ाज़ और लाखों मुसलमानों के हाफ़िज़ा के सीनों में क़ुरआन-ए-मजीद सुरिक्षत हो चुका था और यह वही क़ुरआन-ए-मजीद था मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ था और उनमें से अधिकतर ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हिफ़्ज़ किया था।

और यह हुफ़्फ़ाज़ समस्त इस्लामी हकूमत और ग़ैर इस्लामिया में फैल चुके थे। अब प्रश्न यह पैदा होता है क्या हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह सम्भव था कि इन हुफ़्फ़ाज़ के हाफ़िज़ और सीनों से असल क़ुरआन-ए-मजीद मिटा कर अपना जारी करदा क़ुरआन-ए-मजीद डलवा दें?

चौदह सदियां गुज़रने के बाद भी वही क़ुरआन-ए-मजीद सीना से सीना मुसलमानों में प्रचलित है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की माध्यम से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ उसको संदिग्ध बनाने की सैंकड़ों कोशिशें हुईं सबकी सब अल्लाह तआला ने ना-काम-ओ-ना-मुराद फ़रमा दीं। इस लिए आरोप करने वाले को चौदह सदियों की तारीख़ को सम्मुख रखना चाहिए।

इसलिए जिस बुख़ारी की हदीस का एतिराज़ करने वाले ने हवाला दिया है इस में वर्णित है कि असल क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत हफ़सा को वापस कर दिया और असल शब्द ये हैं कि

رَدَّ عُثْمَانُ الصُّحُفَ اِلٰی حَفْصَةَ وَ اَرْ سَلَ اِلٰی کُلِّ اُفُقٍ بِمُصْحَفٍ مِمَّا نَسَخُوا۔وَ اَمَرَ بِمَا سِوَاهُ مِن الْقُرْاٰنِ فِی کُلِّ صَحِیفَةٍاَوْ مُصْحَفٍ اَنْ یُّحَرَّ قَ

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر،باب جمع القرآن)

अनुवाद : असल नुस्ख़ा हज़रत हफ़सा को वापस कर दिया। फिर नक़ल शूदा नुस्ख़ों से एक एक नुस्ख़ा हर इलाक़े में भेज दिया गया और हुक्म दिया कि असल नुस्ख़ा क़ुरआन-ए-मजीद के अतिरिक्त जो किसी के पास है क़ुरआन-ए-मजीद के नाम से लिखा हुआ है उसे जला दिया जाए।

(एतराज़ नम्बर 4) हज़रत उसमान ने इस क़ुरआन के नाम पर बनाए जाने वाले नुस्ख़ों को जलाने का हुक्म दिया।

जवाब :इस्लाम की तारीख़ से ज्ञात होता है कि सहाबा नुज़ूल क़ुरआन के आरम्भ से ही ज़ाती तौर पर क़ुरआन मजीद को लिखते जाते थे और इस का सबूत यह है कि हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो नबुव्वत के पांचवें या छटे साल इस्लाम में शामिल हुए थे आपके इस्लाम स्वीकार करने से पहले 40 मर्द और 11औरतें इस्लाम में शामिल हो गए थे। अर्थात कुल मुस्लमानों की संख्या 51 लोगों पर आधारित थी।

(उद्धरित मिशकात अस्मा उर्रिजाल)

हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो अपने घर से हुज़ूर को क़तल करने के लिए निकले थे रास्ते में किसी ने उनको कहा आपकी बहन फ़ातिमा और बहनोई मुस्लमान हो गए हैं अत: हज़रत उम्र अपनी बहन के घर पहुंचे तो बहन ने क़ुरआन के पन्नों को छिपा दिया। इस पर हज़रत उम्र ने अपनी बहन को कहा। وَقَالَ لِاُخْتِهٖ اَعْطِیْنِیْ هٰذِهِ الصَّحِیْفَةَ

(सीरत इब्न हश्शाम ,बाब इस्लाम उम्र बिन अल खत्ताब पृष्ठ 41)

प्रिय पाठको ध्यान दें क़ुरआन के नाज़िल होने पर अभी पांचवां या छटा साल था उस वक़्त तक नाज़िल हुआ क़ुरआन पन्नों की शक्ल में हज़रत उम्र की बहन फ़ातिमा के पास था इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि क़ुरआन-ए-मजीद के नाम से बहुत से नुस्ख़े सहाबा किराम ने अपने पास लिखे हुए थे।

हज़रत उसमान रज़ि ने अपने दौर ख़िलाफ़त में यह महसूस किया कि असल क़ुरआन वही होगा जो असल सनद के अनुसार होगा बाक़ी सब नष्ट किए जाएं

इलाही हिफ़ाज़त का नाक़ाबिल-ए-तरदीद सबूत

(1)क़ुरआन-ए-मजीद के मुहाफ़िज़ हक़ीक़ी अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि के द्वारा असल प्रमाणिक नुस्ख़ा क़ुरआन एक स्थान पर तैय्यार करवाया।

(2) अगर अल्लाह तआला ऐसा न करवाता तो क़ुरआन-ए-मजीद हदीसों की तरह हो जाता और जैसे कुछ हदीसों में मतभेद है वैसे ही क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में सहाबा की राए विभिन्न हो सकती थीं और हर सहाबी कहता जो क़ुरआन का नुस्ख़ा, मैंने लिखा है इस में यह है और दूसरा कहता मेरे क़ुरआन के नुस्ख़ा में कुछ अन्य है क्योंकि हर सहाबी ग़लती कर सकता है। इबारत को समझ कर लिखना हर इन्सान का काम नहीं होता इसलिए ऐसी लिखी गई क़ुरआन की आयतों में ग़लती की संभावना हो सकती थी। हज़रत उसमान रज़ि ने इन सब संभावनाओं को समाप्त करने का,और जलाने का हुक्म दिया और यह सब अल्लाह तआला के आदेश के अधीन ही हो रहा था।

(3)अगर ग़ैर मुसद्दिक़ा बनाम क़ुरआन के नुस्ख़ों को जलाया न जाता तो यह शंका थी कि मुनाफ़क़ीन या मुख़ालिफ़ीन इस्लाम यहूद तथा नसारा ख़ुद इबारतें बना कर किसी नुस्ख़ा क़ुरआन में शामिल करवा सकते थे और कह देते यह भी क़ुरआन है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-मजीद में यहूद के बारे में फ़रमाता है कि یَسْمَعُوْنَ کَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ یُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ (सूरत अलबकर,नम्बर 76) अनुवाद :जब कि उनमें से एक गिरोह इलाही कलाम को सुनता है और उसे अच्छी तरह समझने के बावजूद इस में परिवर्तन करता है और वे ख़ूब जानते हैं।

फिर दूसरी जगह फ़रमाता है فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ یَکْتُبُوْنَ الْکِتٰبَ بِاَیْدِیْهِمْ ثُمَّ یَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ (सूरत अलबकर ,आयत नम्बर 80) अनुवाद अत: हलाकत है उन के लिए जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है

यहूद के एक गिरोह की आदत थी कि क़ुरआन-ए-मजीद के शब्दों को बदल कर पढ़ते थे ताकि उसका अर्थ बदल जाए। इसीलिए अल्लाह तआला ने मोमिनों को हुक्म दिया कि لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا (सूरत अलबकर ,नम्बर 105) अनुवाद: رَاعِنَا न कहा करो बल्कि यह कहा करो कि हम पर नज़र फ़र्मा। तफ़ासीर में आता है कि यहूद رَاعِنَا को رَاعِیْنَا(हमारे चरवाहे) पढ़ा करते थे

हज़रत उम्मुल् मोमिनीन रज़ी अल्लाह अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ यहूद आए और उन्होंने (अस्सलामु अलैकुम कहने की बजाय ,हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए और शब्द "सलाम" को बदलते हुए कहा "अलस्सामु अलैक "(अर्थात नऊज़-बिल्लाह बददुआ दी

(उद्धरित सही मुस्लिम ,किताब अस्सलाम ,बाब अन्नहा अन इब्तिदा अहले किताब बिस्सलाम)

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जब से दुनिया की तारीख़ ज्ञात है आज तक कोई व्यक्ति फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो के बराबर विजय और बहादुर नहीं गुज़रा जो विजय और इन्साफ दोनों से परिपूर्ण हो

विजय भी मिली हूँ और अदल और इन्साफ़ भी क़ायम हो

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो विशेषताओं और गुणों का वर्णन

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में होने वाली महान विजय के कारण

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की घटना का विस्तारपूर्ण वर्णन

दो मरहूमीन आदरणीय कमरुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला इंडोनेशिया और आदरणीया सबीहा हारून साहिबा पत्नी सुलतान हारून ख़ान साहब मरहूम का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 अक्तूबर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने की विजय का वर्णन हुआ था । हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की जीवनी लिखने वाले एक सीरत निगार अल्लामा शिब्ली नुमानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की विजय और इस के कारण और माध्यम का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि एक इतिहासकार के दिल में तुरन्त यह प्रश्नों पैदा होंगे कि कुछ रेगिस्तान में रहने वालों ने ने क्योंकर फ़ारस और रुम का तख़्ता उलट दिया?

क्या यह दुनिया के तारीख़ की कोई अलग घटना थी? (अपवाद की घटना थी?) अंतत: इस के कारण क्या थे? क्या इन घटनाए को सिकन्दर और चंगेज़ ख़ान की विजय से समानता दी जा सकती है? जो कुछ हुआ, इस में उस समय की ख़िलाफ़त का कितना हिस्सा था? ये कहते हैं कि हम इस अवसर पर इंही प्रश्नों का उत्तर देना चाहते हैं लेकिन सारांश के साथ पहले यह बता देना ज़रूरी है कि फ़ारूक़ की विजय की वुसअत और इस की चार सीमाएं क्या थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के कब्ज़े में देश का कुल क्षेत्रफल बाईस लाख इक्कावन हज़ार तीस मुरब्बा मील था। अर्थात पवित्र मक्का से उत्तर की जानिब दस सौ छत्तीस मील, पूर्व की जानिब दस सौ सेंतालिस मील, और दक्षिण की जानिब चार सौ तेरासी मील था। ये समस्त विजय विशेष हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की विजय हैं और इस की समस्त समय दस वर्ष से कुछ ही अधिक है। यह पृष्ठभूमि जो वर्णन हुई है जिस को तारीख़ के हवाले से मैं वर्णन करने लगा हूँ यह इसलिए है कि इन विजय को समझने के लिए इस बात का जानना भी ज़रूरी है। बहरहाल मैं वर्णन करता हूँ कि यूरोपियन इतिहासकारों की इन विजय के बारे में क्या राय है। पहले प्रश्नों का उत्तर यूरोपियन इतिहासकारों ने यह दिया है कि इस वक़्त फ़ारस और रूम दोनों सल्तनतें बुलंदियों से गिर चुकी थीं जो उनका इंतिहा थी वहां तक वे पहुंच चुकी थीं और कानून-ए-क़ुदरत है कि उन्होंने नीचे गिरना ही था। फिर कहते हैं कि फ़ारस में ख़ुसरो परवेज़ के बाद निज़ाम-ए-सलतनत बिल्कुल अस्तव्यस्त हो गया था क्योंकि कोई योग्य व्यक्ति जो हुकूमत को सँभाल सकता हो मौजूद नहीं था। दरबार के सहायतागार और अरकान में साज़िशें शुरू हो गई थीं और इन्ही साज़िशों के कारण सत्ता चलाने वालों में अदल बदल होता रहता था। इसलिए तीन चार वर्ष के समय में ही अनान हुकूमत छ: सात लोगों के हाथ में आई और निकल गई। यूरोपियन इतिहासकार यह कहते हैं कि एक और वजह यह हुई कि नौशेरवां से कुछ पहले मुज़दाकिया फ़िर्क़ा का बहुत ज़ोर हो गया था जो अल्हाद और ज़ंदिक़ा की तरफ़ आकर्षित था। इस फ़िर्क़ा की मान्यताएं ये थीं कि लोगों के दिलों से लालच और अन्य मतभेदों को दूर कर दिया जाए और महिलाओं के साथ समस्त देशों को संयुक्त साम्राज्य क़रार दिया जाए अर्थात महिला की भी कोई इज़्ज़त नहीं थी ताकि धर्म पाक और साफ़ हो जाए। यह दृष्टिकोण था उनका और कुछ के नज़दीक यह समाजी तहरीक थी जिसका मक़सद ज़रतशती धर्म को खत्म करना था। नौशेरवां ने जबकि तलवार के माध्यम से इस धर्म को दबा दिया था लेकिन बिल्कुल उस को मिटा नहीं सका। इस्लाम के क़दम जब फ़ारस में पहुंचे तो इस फ़िरक़े के लोगों ने मुसलमानों को इस हैसियत से अपना आश्रय समझा कि वे किसी धर्म और मान्यताओं से झगड़ा नहीं करते थे। ये यूरोपियन इतिहासकारों का दृष्टिकोण है।

फिर वे लिखते हैं कि ईसाईयों में नसतूरी फ़िर्क़ा (nestorian) जिसको और किसी हुकूमत में पनाह नहीं मिलती थी वह इस्लाम के साय में आकर मुख़ालिफ़ों के अत्याचार से बच गया। इस तरह मुसलमानों को दो बड़े फ़िर्क़ों की हमदर्दी और साहयता मुफ़्त में हाथ आ गई। रुम की सलतनत ख़ुद कमज़ोर हो चुकी थी। इस के साथ ईसाइयत के आपसी मतभेदों इन दिनों ज़ोरों पर थे और चूँकि उस वक़्त तक धर्म को निज़ाम हुकूमत में दख़ल था इसलिए इस मतभेद का प्रभाव धर्मी के विचारों तक सीमित नहीं था बल्कि उसकी वजह से ख़ुद सलतनत कमज़ोर होती जाती थी। अल्लामा इस मत का खंडन करते हुए वर्णन करते हैं जो यूरोपियन इतिहासकारों की राय अभी वर्णन हुई है। कहते हैं कि यह उत्तर जबकि वाक़ईत से बिल्कुल ख़ाली नहीं है लेकिन जिस क़दर वाक़यात है इस से अधिक तर्क की शैली को बढ़ाना चढ़ाना है जो यूरोप का विशेष ढंग है। निसंदेह उस वक़्त फ़ारस और रुम की सल्तनतें वास्तविक बुलंदी पर नहीं रही थीं लेकिन इस का केवल इस क़दर परिणाम हो सकता था कि वे पुरज़ोर मज़बूत सलतनत का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं न यह कि अरब जैसी बिना साज़ो सामान क़ौम से टकरा कर पुर्ज़े पुर्ज़े हो जातीं। रुम और फ़ारस जंग के फ़ोनों में कुशल थे। यूनान में विशेष जंग के नियमों पर जो पुस्तकें लिखी गई थीं और जो अब तक मौजूद हैं रोमियों में एक समय तक उस का अमली रिवाज रहा। इसके साथ रसद की प्रचुरता थी। साज़ो सामान अत्यधिक थे। युद्ध के हथियार भिन्न भिन्न प्रकार के थे। अलग किस्म की चीज़ें थीं। फ़ौजों की कसरत में कमी नहीं आई थी और सबसे बढ़कर यह कि किसी मुल्क पर चढ़ कर जाना नहीं था बल्कि अपने मुल्क में अपने क़िलों में अपने मोर्चों में रह कर अपने मुल्क की हिफ़ाज़त करनी थी। मुसलमानों के हमले से ज़रा ही पहले ख़ुसरो परवेज़ के समय में जो ईरान की शान-ओ-शौकत का चरम था केसर-ए-रुम ने ईरान पर हमला किया और हर हर क़दम पर विजय हासिल करता हुआ इस्फ़िहान तक पहुंच गया। शाम के सूबे जो ईरानियों ने छीन लिए थे वापस ले लिए और नए सिरे से प्रशासनिक इच्छा क़ायम किया। ईरान में ख़ुसरो परवेज़ तक साधारणता प्रमाणित है कि सलतनत की निहायत सम्मान और प्रतिष्ठा थी। ख़ुसरो परवेज़ की वफ़ात से इस्लामी हमले तक केवल तीन चार वर्ष का समय है। इतने थोड़े समय में ऐसी क़ौम और पुरानी सलतनत कहाँ तक कमज़ोर हो सकती थी। जबकि तख़्त नशीनों की अदल बदल से निज़ाम में अंतर आ गया था लेकिन चूँकि सलतनत के अंग अर्थात ख़ज़ाना, फ़ौज और मुहासिल में कोई कमी नहीं आई थी इसलिए जब यज़्द गर्द तख़्त नशीन हुआ और दरबारियों ने इस्लाह की तरफ़ ध्यान किए तो तुरन्त नए सिरे से वही ठाठ क़ायम हो गए। मुज़दाकिया फ़िर्क़ा जबकि ईरान में मौजूद था लेकिन हमें समस्त तारीख़ में उनसे किसी किस्म की सहायता मिलने का हाल ज्ञात नहीं होता। अर्थात मुसलमानों को कोई सहायता मिली हो। इसी तरह फ़िर्क़ा निस्तूरी की कोई साहयता हमें ज्ञात नहीं। नस्तूरी ईसाइयों का एक फ़िर्क़ा है जिसका अक़ीदा था कि हज़रत-ए-ईसा की ज़ात में उलूहियत और बशरियत दोनों अलग अलग पाई जाती थीं। ईसाइयत के धार्मिक मतभेदों का असर भी किसी घटना पर ख़ुद यूरोपियन इतिहासकारों ने कहीं नहीं बताया।

अब अरब की हालत देखो। समस्त फ़ौजें जो मिस्र और ईरान और रुम की जंग

में व्यस्त थीं उनकी कुल संख्या कभी एक लाख तक नहीं पहुंची। फ़ुनून-ए-जंग से वाक़फ़ीयत का यह हाल था कि यरमूक पहला युद्ध है जिसमें अरब ने ताबिया के ढंग पर चढ़ाई की। ताबिया जंग के वक़्त फ़ौज की ऐसी तर्तीब जिसमें सिपहसालार या बादशाह जो लश्कर की कमान करता है समस्त फ़ौज के मध्य में खड़ा होता है। इस को तरतीब-ए-ताबिया कहते हैं। कवच, ज़िराह, चिल्ला् (लोहे या फ़ौलाद की पोशाक) जौशन (कवच की एक किस्म बक्तर, चार आईना फ़ौलाद की चार प्लेटें जो सीने और पुश्त और दोनों रानों पर बाँधी जाती थीं आहनी दस्ताने, जेहलम (ख़ुद पर लगी हुई लोहे की कड़ियाँ या निक़ाब जुराबें जो हर ईरानी सिपाही का आवश्यक जंग का वस्त्र था। इस में से अरबों के पास केवल ज़िरह थी और वह भी अक्सर चमड़े की होती थी। उनका यह सारा प्रोटेक्शन (protection) का सामान लोहे का था और अरबों के पास यदि कुछ छोटा मोटा था भी तो वह चमड़े का था। रिकाब लोहे की बजाय लकड़ी की होती थी। युद्ध के हथियार में गुज़र और कमंद से अरब बिल्कुल परिचित नहीं थे। गुर्ज़ एक हथियार का नाम है जो ऊपर से गोल और मोटा होता है और नीचे दस्ता लगा होता है और दुश्मन के सिर पर मारते हैं। कमंद फंदा या जाल या रस्सी। अरबों के पास तीर थे लेकिन ऐसे छोटे और कम हैसियत थे कि क़ादसिया के मार्के में ईरानियों ने जब पहले-पहल अरबों के इन तीरों को देखा तो समझा कि तकले या सोए हैं। मुसन्निफ़ अल्लामा साहिब उनके वास्तविक कारण वर्णन करते हुए लिखते हैं कि हमारे नज़दीक इस प्रश्नों का वास्तविक उत्तर केवल इस क़दर है कि मुसलमानों में इस वक़्त पैग़ंबर-ए-इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कारण जो जोश, संकल्प, इस्तिक़लाल, बुलंद हौसला, दिलेरी पैदा हो गई थी और जिसको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने और अधिक क़वी और तेज़ कर दिया था।

रुम और फ़ारस की सल्तनतें ठीक बुलंदी के ज़माने में भी इस की टक्कर नहीं उठा सकती थीं। जबकि उसके साथ और चीज़ें भी मिल गई थीं जिन्हों ने विजय में नहीं बल्कि हुकूमत को बनाने में सहायता दी। इस में सबसे मुक़द्दम चीज़ मुसलमानों की रास्त बाज़ी और दियानतदारी थी। जो मुल्क फ़तह होता था वहां के लोग मुसलमानों की रास्त बाज़ी सच्चाई के इस क़दर प्रेमी हो जाते थे कि विधवाओं धार्मिक मतभेदों के उनकी सलतनत का पतन नहीं चाहते थे। यरमूक के मार्के से पूर्व जंग के लिए जब मुसलमान शाम के ज़िलों से निकले तो समस्त ईसाई प्रजा ने पुकारा कि ख़ुदा तुम को फिर इस मुल्क में लाए और यहूदियों ने तौरेत हाथ में लेकर कहा कि हमारे जीते-जी क़ैसर अब यहां नहीं आ सकता। रोमियों की हुकूमत जो शाम और मिस्र में थी वह बिल्कुल क्रूर थी इसलिए रोमियों ने जो मुक़ाबला किया वह सलतनत और फ़ौज के ज़ोर से किया, प्रजा उनके साथ नहीं थी। मुसलमानों ने जब सलतनत का ज़ोर तोड़ा तो आगे रास्ता साफ़ था, कोई रोक नहीं थी। अर्थात प्रजा की तरफ़ से किसी किस्म का प्रतिरोध नहीं हुआ। जबकि ईरान की हालत इस से अलग थी। वहां सलतनत के नीचे बहुत से बड़े बड़े रईस थे जो बड़े बड़े ज़िलों और सूबों के मालिक थे वे सलतनत के लिए नहीं बल्कि ख़ुद अपनी ज़ाती हुकूमत के लिए लड़ते थे। यही वजह थी कि पाया तख़्त के फ़तह कर लेने पर भी फ़ारस में हर क़दम पर मुसलमानों को प्रतिरोध पेश आएं लेकिन आम प्रजा वहां भी मुसलमानों की प्रेमी होती जाती थी और इसलिए फ़तह के बाद हुकूमत बनाने में उनसे बहुत सहायता मिलती थी। हुकूमत के क़ियाम में सहायता मिलती थी। एक और बड़ा कारण यह था कि मुसलमानों का प्रथम प्रथम हमला शाम और इराक़ पर हुआ और दोनों स्थानात पर कसरत से अरब आबाद थे। शाम में दमिशक़ का हाकिम ग़स्सानी ख़ानदान था जो क़ैसर के नाम का महकूम था। इराक़ में नज्मी ख़ानदान वाले वास्तव में मुल्क के मालिक थे जबकि किसरा को टैक्स के तौर पर कुछ देते थे। इन अरबों ने जबकि इस वजह से कि ईसाई हो गए थे प्रथम प्रथम मुसलमानों का मुक़ाबला किया लेकिन क़ौमी इत्तिहाद की भावना व्यर्थ नहीं जा सकता थी। इराक़ के बड़े बड़े रईस बहुत जल्द मुसलमान हो गए और मुसलमान हो जाने पर वे मुसलमानों के मददगार बन गए। शाम में अंतत: अरबों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और रोमियों की हुकूमत से आज़ाद हो गए।

सिकन्दर और चंगेज़ इत्यादि का नाम लेना यहां बिल्कुल बे अवसर है। निसंदेह इन दोनों ने बड़ी बड़ी विजय हासिल कीं लेकिन किस तरह? क़हर, अत्याचार और खुले आम क़तल आम के कारण। चंगेज़ का हाल तो सबको ज्ञात है। सिकन्दर इत्यादि की विजय का यदि समानता करें तो सिकन्दर की यह कैफ़ीयत है कि जब उसने शाम की तरफ़ शहर सूर फ़तह किया तो चूँकि वहां के लोग देर तक जम कर लड़े थे इसलिए क़त्ल-ए-आम का हुक्म दिया और एक हज़ार शहरियों के शहर पनाह की दीवार पर लटका दिए गए। जो फ़सील थी इस पर लटका दिए। इस के साथ तीस हज़ार बाशिंदों को लौंडी ग़ुलाम बना कर बेच डाला। जो लोग पुराने रहने वाले और आज़ादी पसंद थे उनमें से एक व्यक्ति को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा। इसी तरह फ़ारस में जब इस (एस फ़ारस के पुराने शहरों में से इस) को फ़तह किया तो समस्त मर्दों को क़तल कर दिया। इसी तरह की और भी बे रहमियाँ उस के कारनामों में वर्णित हैं अर्थात सिकन्दर के कारनामों में। फिर इस्लामी विजय से इस की किस तरह समानता हो सकती है। आम तौर पर प्रसिद्ध है कि अत्याचार और सितम से सलतनत बर्बाद हो जाती है। यह इस लिहाज़ से सही है कि अत्याचार की बक़ा नहीं। इसलिए सिकन्दर और चंगेज़ की सल्तनतें भी देर पा न हुईं लेकिन फ़ौरी विजय के लिए इसी किस्म की क्रूरता कारगर साबित हुई हैं। इस की वजह से मुल्क का मुलक भयभीत हो जाता है और चूँकि प्रजा का बड़ा गिरोह हलाक हो जाता है इसलिए बग़ावत और फ़साद का अंदेशा बाक़ी नहीं रहता। यही वजह है कि चंगेज़, बख्ते नस्र, तैमूर, नादिर शाह जितने बड़े बड़े विजय गुज़रे हैं सब के सब क्रूर भी थे लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की विजय में कभी क़ानून और इन्साफ़ से बाहर नहीं हो सकता था।

आदमियों का क़त्ल-ए-आम एक तरफ़, दरख़्तों के काटने तक की आज्ञा नहीं थी। बच्चों और बूढ़ों से बिल्कुल झगड़ा नहीं किया जा सकता था। विधवाओं युद्ध के कोई व्यक्ति क़तल नहीं किया जा सकता था। अर्थात लड़ाई के दौरान में क़तल हो तो हो, इस के विधवाओं किसी को क़तल नहीं करना। दुश्मन से किसी अवसर पर वादा तौड़ना या धोखा नहीं किया जा सकता था। अफ़िसरों को ताकीदी अहकाम दिए जाते थे कि यदि दुश्मन तुमसे लड़ाई करें तो तुम उनसे धोखा न करो। किसी की नाक, कान न काटो। किसी बच्चे को क़तल न करो। खुल के लड़ो। फिर जो लोग आज्ञाकारी हो कर बाग़ी हो जाते थे अर्थात एक दफ़ा इताअत कर ली फिर बाग़ी हो गए उनसे पुन: इक़रार लेकर दरगुज़र की जाती थी यहां तक कि जब अर्बूस वाले तीन तीन दफ़ा नियमित इक़रार करके फिर गए, (यह अर्बूस जो है यह शाम की आख़िरी सरहद पर स्थित एक शहर का नाम है जिसकी सरहद एशिया कूचक से मिली हुई थी। तो केवल इस क़दर किया कि उनको वहां से निर्वासन कर दिया लेकिन इस के साथ उनकी समस्त संपत्ति कब्ज़े में की क़ीमत अदा कर दी। पैसे दे दिए। फिर ये लिखते हैं कि यदि ख़ैबर के यहूदियों को साज़िश और बग़ावत के जुर्म में निकाला था तो उनकी कब्ज़े में अर्ज़ियात का मुआवज़ा दे दिया था और ज़िलों के हुक्काम को अहकाम भेज दिए कि जिधर से उन लोगों का गुज़र हो उनको हर तरह की साहयता दी जाए और जब किसी शहर में क़ियाम पज़ीर हों तो एक साल तक उनसे टैक्स न लिया जाए।

फिर लिखते हैं कि जो लोग फ़ारूक़ की विजय की हैरतअंगेज़ी का उत्तर देते हैं कि दुनिया में और भी ऐसे विजय गुज़रे हैं उनको यह दिखाना चाहिए कि इस सावधानी, इस क़ैद अर्थात उतनी पाबंदी, इस दरगुज़र के साथ दुनिया में किस हुकमरान ने एक चप्पा भी ग़ैरों की ज़मीन फ़तह की है। इसके विधवाओं सिकन्दर और चंगेज़ इत्यादि ख़ुद हर अवसर और हर जंग में शामिल रहते थे और ख़ुद सिपहसालार बन कर फ़ौज को लड़ाते थे इसकी वजह से विधवाओं इसके कि फ़ौज को एक कुशल सिपहसालार हाथ आता था, फ़ौज के दिल क़वी रहते थे और उनमें बेशक अपने आक़ा पर फ़िदा होने का जोश पैदा होता था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो समस्त समय ख़िलाफ़त में एक दफ़ा भी किसी जंग में शामिल नहीं हुए। फ़ौजें हर जगह काम कर रही थीं। जबकि उनकी बाग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में रहती थी। एक और बड़ा स्पष्ट और स्पष्ट अंतर यह है कि सिकन्दर इत्यादि की विजय गुज़रने वाले बादल की तरह थीं। एक दफ़ा ज़ोर से आया और निकल गया। इन लोगों ने जो देश फ़तह किए वहां कोई निज़ाम हुकूमत नहीं क़ायम की। इसके विपरीत फ़ारूक़ की विजय में यह उस्तिवारी थी कि जो देश उस वक़्त फ़तह हुए तेराह सौ वर्ष गुज़रने पर आज भी इस्लाम के क़बज़ा में हैं और ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में हर किस्म के मुल्की इंतिज़ामात वहां क़ायम हो गए थे।

फिर जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की विजय का विशेष किरदार है इस के बारे में वे लिखते हैं कि आख़िरी प्रश्नों का उत्तर आम राय के अनुसार यह है कि विजय में ख़लीफ़-ए-वक़्त का इतना किरदार नहीं है बल्कि उस वक़्त के जोश और अज़म की जो हालत थी उसी की वजह से समस्त विजय हुईं। यह एक प्रश्नों है लेकिन कहते हैं कि जो कहा जाता है कि ख़लीफ़ा का किरदार नहीं है, हमारी राय के नज़दीक यह सही नहीं है। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत

अली रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में भी तो अंतत: वही मुसलमान थे लेकिन क्या परिणाम हुआ। जोश और असर निसंदेह आसमानी क़ुव्वतें हैं लेकिन ये क़ुव्वतें उस वक़्त काम दे सकती हैं जब काम लेने वाला भी इसी ज़ोर और क़ुव्वत का हो। क़ियास और इस्तिदलाल की ज़रूरत नहीं, घटनाएँ ख़ुद उस का फ़ैसला कर सकती हैं। विजय की तफ़सीली हालात पढ़ कर साफ़ ज्ञात होता है कि समस्त फ़ौज पुत्ली की तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के इशारों पर हरकत करती थी और फ़ौज का जो नज़म-ओ-नसक़ था वह विशेष उनकी सियासत और तदबीर के कारण है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौज की तर्तीब, फ़ौजी मश्क़ें, बैरकों का निर्माण, घोड़ों की देख भाल, क़िलों की हिफ़ाज़त, जाड़े और गर्मी के लिहाज़ से हमलों का ताय्युन, फ़ौज की नक़ल-ओ-हरकत, पर्चा नवीसी का इंतिज़ाम, आफ़िसरान फ़ौजी का चुनाव अर्थात जो फ़ौजी आफ़िसरान थे उनका इंतिख़ाब, क़िलाशिकन आलात का इस्तिमाल, यह और इस किस्म के उमूर ख़ुद ईजाद किए और उनको किस-किस अजीब-ओ-ग़रीब ज़ोर-ओ-क़ुव्वत के साथ क़ायम रखा यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का विशेषता है। इराक़ की विजय में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरहक़ीक़त ख़ुद सेनापतित्य का काम किया था। फ़ौज जब मदीना से रवाना हुई तो एक एक मंज़िल बल्कि रास्ता तक ख़ुद निर्धारित कर दिया था कि यहां से जाना है, यहां से गुज़रना है, यहां यह करना है और इस के अनुसार तहरीरी अहकाम भेजते रहते थे। फ़ौज जब क़ादसिया के क़रीब पहुंची तो अवसर का नक़्शा मंगवा कर भेजा और इस के लिहाज़ से फ़ौज की तर्तीब और चढ़ाई के विषय में हिदायतें भेजीं। जिस क़दर अफ़्सर जिन जिन कामों पर निर्धारित होते थे उनके विशेष हुक्म के अनुसार निर्धारित होते थे। तारीख़ तिब्री में यदि इराक़ की घटनाए को तफ़सील से देखो तो साफ़ नज़र आता है कि एक बड़ा सिपहसालार दूर से समस्त फ़ौजों को लड़ा रहा है और जो कुछ होता है उस के इशारों पर होता है। इन समस्त लड़ाईयों में जो दस वर्ष की समय में पेश आईं सबसे अधिक ख़तरनाक दो अवसर थे एक नहावंद का युद्ध जब ईरानियों ने फ़ारस के राज्यों में हर जगह नक़ीब दौड़ा कर समस्त मुल्क में आग लगा दी थी और लाखों फ़ौज मुहय्या कर के मुसलमानों की तरफ़ बढ़े थे। दूसरे जब केसर-ए-रुम ने जज़ीरा वालों की साहयता से पुन: हिमस पर चढ़ाई की थी। इन दोनों मारकों में केवल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की कुशल योजना थी जिसने एक तरफ़ एक उठते हुए तूफ़ान को दबा दिया और दूसरी तरफ़ एक बड़े पहाड़ के परख़चे उड़ा दिए। इन घटनाए की तफ़सील के बाद यह दावा साफ़ साबित हो जाता है कि जब से दुनिया की तारीख़ ज्ञात है आज तक कोई व्यक्ति फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो के बराबर विजय और बहादुर नहीं गुज़रा जो विजय और इन्साफ दोनों से परिपूर्ण हो।(उद्धरित अल्-फ़ारूक़ अज़ मौलाना नुमानी, पृष्ठ 170 से 177, 287 दारुल इशात कराची 1991 ई.) (उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामिया, भाग 20 अधीन शब्द मुज़दक, पृष्ठ 529-530 विभाग उर्दू पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर) (उर्दू शब्दकोश, अधीन शब्द नसतूरीत, भाग 19 पृष्ठ 932 उर्दू शब्दकोश बोर्ड कराची) (उर्दू शब्दकोश, अधीन शब्द ताबिया, भाग 5, पृष्ठ 281 -282 उर्दू शब्दकोश बोर्ड कराची)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 249-250 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

विजय भी मिली हों और अदल और इन्साफ़ भी क़ायम किया हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को शहादत की दुआ देने के बारे में आता है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद कहा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि एक स्थान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सफ़ैद कपड़ों में मलबूस देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे यह कपड़े नए हैं या धुले हुए? हज़रत इब्न-ए-उमर कहते हैं कि मुझे याद नहीं रहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस का क्या उत्तर दिया लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को दुआ देते हुए फ़रमाया कि नए कपड़े पहनो और योग्य-ए-प्रशंसा ज़िंदगी गुज़ारो और शहीदों की मौत पाओ और हज़रत इब्न-ए-उमर कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि अल्लाह तुम्हें दुनिया और आख़िरत में आँखों की ठंडक अता करे। (मस्नद अहमद बिन हनबल, मस्नद अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अल्-ख़त्ताब, भाग 2 पृष्ठ 429 हदीस 5620 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1998 ई.)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो उहद पहाड़ पर चढ़े तो वे उनके समेत हिलने लगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। उहद ठहर जा। तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(सही अल् बुखारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन नबी, हदीस 3675)

हज़रत उबै बिनकाब रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिब्राइल ने मुझे कहा कि इस्लाम के अलीम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात पर रोएगा।

(मोअजमाउल कबीर तिबरानी, भाग प्रथम, पृष्ठ 67-68 रिवायत 61 सन उमर वफ़ात फ़ी सुन्नती इख्तेलाफ़ , दारुल अह्या अल् तुर्रास अरबी 2002 ई.)

शहादत की तमन्ना जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को थी उस के बारे में एक रिवायत में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी उम्मुल मोमेनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि मैंने अपने पिता को यह कहते हुए सुना कि اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ قَتْلًا فِيْ سَبِيْلِكَ وَوَفَاةً فِيْ بَلَدِ نَبِيِّكَ कि हे अल्लाह मुझे अपने रास्ते में शहादत नसीब फ़रमा और मुझे अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शहर में वफ़ात दे। कहती हैं कि मैंने कहा यह कैसे सम्भव है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया إِنَّ اللهَ يَأْتِيْ بِأَمْرِهٖ أَنّٰى شَاءَ निसदेह अल्लाह तआला अपना हुक्म ले आता है जिस तरह वह चाहे।

(अल्-कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 252 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने शहादत के विषय में जो दुआ की थी उसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अल्लाह तआला के कितने प्रिय थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि यदि मेरे बाद कोई नबी होना होता तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हो होता। यहां मेरे बाद से मुराद मान बाद है तो वह व्यक्ति जिसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इस योग्य समझते थे कि यदि अल्लाह तआला ने इस ज़माना की ज़रूरत के लिहाज़ से किसी को शहादत के स्थान से उठा कर नबुव्वत के बुलंद स्थान पर निर्धारित करना होता तो इस का मुस्तहिक़ उमर रज़ियल्लाहु अन्हो था। वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जिसकी क़ुर्बानियों को देख कर यूरोप के अशद तरीन मुख़ालिफ़ भी स्वीकार करते हैं कि इस किस्म की क़ुर्बानी करने और इस तरह अपने आपको मिटा देने वाला इन्सान बहुत कम मिलता है और जिसकी ख़िदमात के विषय में वह यहां तक बढ़ोतरी करते हैं कि इस्लाम की तरक़्क़ी को उनसे ही जोड़ते हैं। वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हो दुआ किया करते थे कि इलाही मेरी मौत मदीना में हो और शहादत से हो।'' हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने'' यह दुआ मुहब्बत के जोश में की अन्यथा यह दुआ थी बहुत ख़तरनाक। इस के अर्थ यह बनते थे कि कोई इतना ज़बरदस्त ग़नीम हो' ऐसा हमला-आवर हमला करने वाला हो'' कि जो समस्त इस्लामी देश को फ़तह करता हुआ मदीना पहुंच जाए और फिर वहां आकर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद करे लेकिन अल्लाह तआला जो दिलों का हाल जानता है उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की इस इच्छा को भी पूरा कर दिया और मदीना को भी इन आफ़ात से बचा लिया जो बज़ाहिर इस दुआ के पीछे गुप्त थीं और वह इस तरह कि उसने मदीना में ही एक काफ़िर के हाथ से आप रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद करवा दिया। बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की दुआ से पता लग जाता है कि उनके नज़दीक ख़ुदा तआला के क़ुरब की यही निशानी थी कि अपनी जान को इस की राह में क़ुर्बान करने का अवसर मिल सके लेकिन आज क़ुरब की यह निशानी समझी जाती है।" अपने ख़ुतबा में एक वसीयत करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो, अहमदियों को फ़रमा रहे हैं कि' लेकिन आज क़ुरब की यह निशानी समझी जाती है कि ख़ुदा बन्दे की जान बचा ले।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 17 पृष्ठ 474-475)

एक और जगह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की घटना और दुआ का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में लिखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमेशा दुआ करते थे कि मुझे मौत मदीना में आए और शहादत की मौत आए।

देखो मौत किस क़दर भयानक चीज़ है। मौत के वक़्त अज़ीज़ से अज़ीज़ भी साथ छोड़ जाते हैं। कहते हैं किसी महिला की एक बेटी बीमार हो गई। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो घटना सुना रहे हैं कि मौत से लोग किस तरह डरते हैं। इस डरने की एक घटना इस तरह है, एक कहानी है कि किसी महिला की बेटी

बीमार हो गई। वह दुआएं करती थी ख़ुदाया मेरी बेटी बच जाए और इस की जगह मैं मर जाऊं। बहुत प्यार का इज़हार कर रही थी बेटी से। एक रात संयोग से इस महिला की गाय की रस्सी खुल गई और उसने एक बर्तन में मुँह डाला। गाय ने बर्तन में मुँह डाल दिया जिसमें उस का सिर फंस गया और वह इसी तरह घड़ा सिर पर उठा कर इधर उधर भागने लगी। गाय परेशान हो गई, सिर फंस गया, भागने लगी। यह देखकर कि गाय के जिस्म पर मुँह की बजाय कोई और बड़ी सी चीज़ है वह महिला डर गई। उस की आँख खुली तो उसने देखा कि यह क्या है? गाय भाग रही है और उस के मुँह पर कोई और चीज़ नज़र आ रही है। वह डर गई। उसने समझा कि शायद मेरी दुआ क़बूल हो गई है और इज़राईल मेरी जान निकालने के लिए आया है। इस पर बे-इख़्तियार बोल उठी कि इज़राईल बीमार मैं नहीं हूँ बल्कि वह लेटी है। उस की जान निकाल ले अर्थात बेटी की तरफ़ इशारा किया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि जान इतनी प्यारी चीज़ है कि उसे बचाने के लिए इन्सान हर सम्भव तदबीर करता है। कहाँ तो यह था कि दुआ कर रही थी। कहाँ जब देखा कि वाक़ई कोई ऐसा ख़तरा पैदा हो गया है तो बेटी की तरफ़ इशारा कर दिया कि इस की जान निकाल लो। फ़रमाते हैं इन्सान हर सम्भव तदबीर करता है जान बचाने के लिए। ईलाज कराते कराते कंगाल हो जाता है लेकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो को यही जान ख़ुदा तआला के लिए देने की इस क़दर इच्छा थी कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो दुआएं करते थे कि मुझे मदीना में शहादत नसीब हो। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मुझे ख़्याल आया करता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह दुआ किस क़दर ख़तरनाक थी। इस के अर्थ यह हैं कि दुश्मन मदीना पर चढ़ आए और मदीना की गलियों में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद कर दे लेकिन ख़ुदा तआला ने उनकी दुआ को और रंग में क़बूल कर ली और वह एक मुसलमान कहलाने वाले के हाथों से ही मदीना में शहीद कर दिए गए। कहा यही जाता है कि शहीद करने वाला काफ़िर था लेकिन कुछ जगह यह भी रिवायत मिल जाती है कि शायद मुसलमान कहलाता था लेकिन बहरहाल उमूमी तौर पर यही है कि वह काफ़िर था। पहली दफ़ा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने काफ़िर वर्णन किया है दूसरी जगह मुसलमान कहलाने वाला कहा है। अर्थात कि ख़ुद भी पूरी तरह तसल्ली नहीं है कि मुसलमान था कि नहीं। और कुछ के नज़दीक वह व्यक्ति मुसलमान नहीं था। हाँ ख़ुद ही यह फ़रमा रहे हैं कि कुछ के नज़दीक वह व्यक्ति मुसलमान नहीं था। बहरहाल वह एक ग़ुलाम था जिस से ख़ुदा तआला ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद करा दिया तो इन्सान ख़ुद जिन चीज़ों को चाहता है और इच्छा रखता है वह उस के लिए मुसीबत नहीं होतीं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद, भाग 1, पृष्ठ 167-166)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह घटना भी एक ख़ुतबे में वर्णन फ़रमाई थी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत और वफ़ात के विषय में सहाबा किराम का रवय्या या हज़रत अबू बुर्दाह रज़ियल्लाहु अन्हो अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक स्वप्न देखा कि लोग एक मैदान में जमा किए गए हैं। उनमें से एक व्यक्ति दूसरे लोगों से तीन हाथ बुलंद है। मैंने पूछा यह कौन है? कहा यह उमर बिन ख़त्ताब हैं। मैंने पूछा कि वह किस वजह से बाक़ी लोगों से बुलंद हैं। कहा उनमें तीन ख़ूबियां हैं ; वह अल्लाह के मुआमले में किसी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरते, वह अल्लाह की राह में शहादत पाने वाले हैं और वह ख़लीफ़ा हैं जिन्हें ख़लीफ़ा बनाया जाएगा। फिर हज़रत ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो अपना स्वप्न सुनाने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उस ज़माने में ख़लीफ़ा थे। उन्हें यह बताया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और उनको ख़ुशख़बरी दी और हज़रत ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया अपना स्वप्न वर्णन करो। रावी कहते हैं कि जब उन्होंने यह कहा कि उन्हें ख़लीफ़ा बनाया जाएगा तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें डाँटा और ख़ामोश करवा दिया क्योंकि यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी की घटना है। फिर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा बने तो आप शाम की तरफ़ गए। आप ख़िताब फ़रमा रहे थे कि आपने हज़रत ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा। आपने उन्हें बुलाया और मंच पर चढ़ा लिया और उन्हें कहा कि अपना स्वप्न सुनाओ। उन्होंने अपना स्वप्न सुनाया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि मैं अल्लाह के मुआमले में किसी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरता तो मैं उम्मीद रखता हूँ कि अल्लाह तआला मुझे उनमें से बना देगा और जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि मुझे ख़लीफ़ा बनाया जाएगा तो मैं ख़लीफ़ा निर्धारित हो चुका हूँ और मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि जो उसने मेरे सपुर्द किया है वह इस में मेरी सहायता फ़रमाए और जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि शहीद किया जाऊँगा तो मुझे शहादत कैसे नसीब हो! मैं जज़ीरा अरब में ही रहता हूँ और अपने इर्द-गिर्द के लोगों से जंग नहीं करता। फिर फ़रमाया यदि अल्लाह ने चाहा तो वह इस शहादत को ले आएगा। अर्थात जबकि बज़ाहिर हालात नहीं हैं लेकिन यदि अल्लाह चाहे तो ला सकता है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने स्वप्न में देखा कि मैंने बहुत से रास्ते इख़्तियार किए फिर वे सब मिट गए। केवल एक रास्ता रह गया और मैं उस पर चल पड़ा यहां तक कि मैं एक पहाड़ पर पहुंचा तो क्या देखता हूँ कि इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और आपके पहलू में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं और आप हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इशारे से बुला रहे हैं कि वे आएं तो मैंने कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह की क़सम! अमीरुल मौमेनीन फ़ौत हो गए। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने कहा (दिल में यह कहते हैं कि) आप यह स्वप्न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को नहीं लिखेंगे। उन्होंने कहा मैं ऐसा नहीं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को उनकी वफ़ात की ख़बर दूं। (अल् तब्कातुल कुब्रा साअद, भाग 3 पृष्ठ 252-253 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1990 ई.)

सईद बिन अबू हिलाल से मर्वी है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो जुमा के दिन लोगों से सम्बोधित हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह की प्रशंसा वर्णन की जिसका वह अधिकारी है। फिर फ़रमाया हे लोगो मुझे एक स्वप्न दिखाया गया है जिस से मैं समझता हूँ कि मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब है। मैं ने देखा कि एक लाल मुर्ग़ है जिसने मुझे दो स्थानों पर चोंच मारी है। इसलिए मैंने यह स्वप्न अस्मा बिंत अमीस से वर्णन की तो उन्होंने बताया अर्थात तावील यह की कि अजमियों में से कोई व्यक्ति मुझे क़तल करेगा। (अल् तब्कातुल कुब्रा साअद, भाग 3 पृष्ठ 255 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1990 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की घटना शहादत के बारे में कि किस दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला हुआ और आप रज़ियल्लाहु अन्हो किस दिन दफ़न हुए? इस सिलसिले में अलग रिवायत मिलती हैं।

तब्कातुल कुब्रा में लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर बुध के रोज़ हमला हुआ और जुमेरात के दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को 26 ज़ुल हज्जा 23 हिज्री को हमला कर के ज़ख़मी किया गया और यक्म मुहर्रम 24 हिज्री सुबह के वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तदफ़ीन हुई। उसमान अख़नस कहते हैं कि एक रिवायत में है कि आपकी वफ़ात 26 ज़ुल हज्जा बुध के रोज़ हुई। अबू माआशर कहते हैं कि एक रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को 27 ज़ुल हज्जा को शहीद किया गया। (अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 278 सन 23 हिज्री दारुल क़ुतुब इल्मिया 1990 ई.)(अल् बिदाया वन्नहाया लेइब्ने कसीर, भाग 4 पृष्ठ 134 प्रकाशन 1997-للطباعة و النشرو التوزيع و الاعلان ई.)

तारीख़ तिब्री और तारीख़ इब्ने असीर के विधवाओं अक्सर इतिहासकारों के नज़दीक हज़रत उमर 26 ज़ुल हज्जा 23 हिज्री को ज़ख़मी हुए और यक्म मुहर्रम चौबीस हिज्री को आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हुई और इसी दिन आपकी तदफ़ीन हुई।

(उद्धरित तारीख़ अलतिबरी भाग 5, पृष्ठ 54 वर्णन अलख़बर ذكر الخبر عن وفاة عمر प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत (अल् कामिल फ़ी-तारीख़, भाग सानी, पृष्ठ 448 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(उद्धरित अल्-फ़ारूक़ अज़ शिब्ली, पृष्ठ 154 इदारा इस्लामियात 2004 ई.)

शहादत की घटना की तफ़सील सही बुख़ारी में यूं वर्णन हुई है। अम्र बिन मयमूना वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को उनके ज़ख़मी किए जाने से कुछ दिन पहले मदीना में देखा। वह हुज़ैफ़ा बिन यमइन और उस्मान बिन हुनेफ़ के पास रुके और फ़रमाने लगे कि इराक़ की अराज़ी के लिए जिसका इंतिज़ाम ख़िलाफ़त की जानिब से उनके सपुर्द था तुम दोनों ने क्या-किया है? क्या तुम्हें यह अंदेशा तो नहीं कि तुम दोनों ने ज़मीन पर ऐसा लगान

निर्धारित किया है जिसकी वे ताक़त नहीं रखते। इन दोनों ने कहा कि हमने वही लगान निर्धारित किया है जिसकी वे ताक़त रखते है। अर्थात ज़मीन की इतनी पोटेंशल (potential)है कि इस में से इतनी फ़सल निकल सके। इस में कोई ज़्यादती नहीं की गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया फिर देख लो कि तुम लोगों ने ज़मीन पर ऐसा लगान तो निर्धारित नहीं किया जिसकी वे ताक़त नहीं रखते हो? रावी कहते हैं इन दोनों ने कहा : नहीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यदि अल्लाह ने मुझे सलामत रखा तो मैं ज़रूर इराक़ वालों की विधवाओं को इस हाल में छोड़ूँगा कि वे मेरे बाद कभी किसी व्यक्ति की मुहताज नहीं होंगी। रावी ने कहा फिर इस बात चीत के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर अभी चौथी रात नहीं आई थी कि वह ज़ख़मी हो गए। रावी ने कहा कि जिस दिन वह ज़ख़मी हुए, मैं खड़ा था। मेरे और उनके मध्य के अतिरिक्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो के कोई न था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आदत थी कि जब दो सफ़ों के मध्य से गुज़रते तो फ़रमाते जाते कि सफ़ें सीधी कर लो। यहां तक कि जब देखते कि उनमें कोई ख़लल नहीं रह गया तो आगे बढ़ते और अल्लाहु-अकबर कहते और कभी कबार नमाज़-ए-फ़ज्र में सूर: यूसुफ़ या सूर: नहल या ऐसी ही सूर: पहली रकात में पढ़ते ताकि लोग जमा हो जाएं। अभी उन्होंने अल्लाहु-अकबर कहा ही था कि मैंने उनको कहते सुना कि मुझे क़तल कर दिया या कहा मुझे कुत्ते ने काट खाया है। जब उसने अर्थात हमला-आवर ने आप पर वार किया तो वह अजमी दो-धारी छुरी लिए हुए भागा। वह किसी के पास से दाएं और बाएं न गुज़रता परन्तु उस को ज़ख़मी करता जाता अर्थात वह जहां से भी गुज़रता इस ख़ौफ़ से कि लोग या कोई पकड़ने वाला यदि कोई पकड़ने की कोशिश करता तो वह उसी छुरी से उस पर भी वार करता जाता और लोगों को ज़ख़मी करता जाता था यहां तक कि उसने तेराह आदमियों को ज़ख़मी किया। उनमें से सात मर गए।

मुसलमानों में से एक व्यक्ति ने जब यह देखा तो उसने कोट, बुख़ारी में इस जगह बुर्नुस का शब्द आया जो उस कपड़े को कहते हैं जिसके साथ सिर ढांपने वाला हिस्सा भी साथ जुड़ा हुआ होता है। लंबा चोग़ा और साथ ही सिर ढांपने वाली टोपी सी लगी होती है। लंबी टोपी को भी कहते हैं। बहरहाल वह कोट उस पर फेंका। जब उसने यक़ीन कर लिया कि वह पकड़ा गया तो उसने अपना गला काट लिया। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो का हाथ पकड़ कर उन्हें आगे किया और रावी कहते हैं कि जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़रीब थे उन्होंने भी वह देखा जो मैंने देखा और मस्जिद के किनारों में जो थे वह नहीं जानते थे अतिरिक्त इसके कि उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ को ग़ायब पाया और वह सुब्हान-अल्लाह सुब्हान-अल्लाह कहने लगे तो अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों को संक्षिप्त नमाज़ पढ़ाई। फिर जब वे नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो देखो मुझको किस ने मारा है? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ देर चक्कर लगाया फिर आए और उन्होंने बताया कि मुग़ीरह के ग़ुलाम ने। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया वही जो कारीगर है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हाँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह उसे हलाक करे मैंने उस के विषय में नेक व्यवहार करने का हुक्म दिया था।

अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह ने मेरी मौत ऐसे व्यक्ति के हाथ से नहीं की जो इस्लाम का दावा करता हो अर्थात यहां से भी साबित है कि वह मुसलमान नहीं था। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो तुम और तुम्हारा बाप पसंद करते थे कि यह अजमी ग़ुलाम मदीना में अधिक से अधिक हों और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो के पास सबसे अधिक ग़ुलाम थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यदि आप चाहें तो मैं कर गुज़रूँ। अर्थात यदि आप चाहें तो हम भी मदीना में मौजूद अजमी ग़ुलामों को क़तल कर दें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि नहीं। दरुस्त नहीं है। कहा कि विशेषता जबकि अब वह तुम्हारी भाषा में बात चीत करते हैं और तुम्हारे क़िबले की तरफ़ मुँह कर के नमाज़ें पढ़ते हैं और तुम्हारी तरह हज करते हैं। बहुत से ग़ुलाम ऐसे भी थे जो मुसलमान हो गए थे। फिर हम उन्हें अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को उठा कर उनके घर ले गए। हम भी उनके साथ घर में चले गए । ऐसा ज्ञात होता था कि मानों मुसलमानों पर इस दिन से पहले ऐसी कोई मुसीबत नहीं आई। कोई कहता : कुछ नहीं होगा और कहता: मुझे उनके बारे में ख़तरा है कि वह जीवित नहीं रह सकेंगे। अंतत: उनके पास नबीज़ लाई गई और उन्होंने उसको पिया जो उनके पेट से निकल गई। फिर उनके पास दूध लाया गया उन्होंने उसे पिया वह भी आपके ज़ख़म से निकल गया तो लोग समझ गए कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हो जाएगी। अम्र बिन मयमूना कहते हैं फिर हम उनके पास गए और अन्य लोग भी आए जो उनकी प्रशंसा करने लगे। और एक नौजवान व्यक्ति आया। उसने कहा अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो! आप रज़ियल्लाहु अन्हो अल्लाह की इस ख़ुशख़बरी से ख़ुश हो जाएं जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी होने की वजह से हासिल है और आरम्भ में इस्लाम लाने के शरफ़ की वजह से है जिसे आप रज़ियल्लाहु अन्हो खूब जानते हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा बनाए गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन्साफ़ किया फिर शहादत। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया: मेरी तो यह इच्छा है। यह बातें बराबर बराबर ही रहीं। ना मेरा मुवाख़िज़ा हो और न मुझे सवाब मिले। जब वह पीठ मोड़ कर जाने लगा तो इस का तेबंद ज़मीन से लग रहा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया इस लड़के को मेरे पास वापस लाओ। फ़रमाने लगे मेरे भतीजे अपना कपड़ा उठाए रखो। इस से तुम्हारा कपड़ा भी अधिक देर चलेगा। ज़मीन से घिसटने से फटेगा नहीं और यह फ़ेअल तुम्हारे रब के नज़दीक तक़्वा के अधिक क़रीब होगा। अर्थात कई दफ़ा घमंड पैदा हो जाता था। इस ज़माने में लंबे कपड़े इसलिए भी लोग पहनते थे कि इमारत की निशानी हो तो उन्होंने कहीं घमंड न पैदा हो और यह तक़्वा के क़रीब रहे।

फिर अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को कहने लगे देखो मुझ पर कितना क़र्ज़ है। उन्होंने हिसाब किया तो इस को छयासी हज़ार दिरहम या उस के क़रीब पाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि यदि उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़ानदान की संपत्ति उसको पूरा कर दे तो फिर उनकी संपत्ति से इस को अदा कर दो अन्यथा बनू अदी बिन काअब से माँगना। यदि उनकी संपत्तिं भी पूरी न हो तो क़ुरैश से माँगना और इसके अतिरिक्त किसी के पास न जाना। यह क़र्ज़ मेरी तरफ़ से अदा कर देना। हज़रत आयशा, अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जाओ और उनसे कहना कि उमर आपको सलाम कहते हैं और अमीरुल मोमेनीन न कहना क्योंकि आज मैं मोमिनों का अमीर नहीं और उनसे कहना कि उमर बिन ख़त्ताब इस बात की आज्ञा चाहता है कि उसे उस के दोनों साथियों के साथ दफ़न किया जाए।

बुख़ारी की शरह उम्दतुल में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ऐसा उस वक़्त कहा था जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो को मौत का यक़ीन हो गया था और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए इस में इशारा था कि अमीरुल मौमेनीन कहने की वजह से डरें नहीं। इसलिए अब्दुल्लाह ने सलाम कहा और अंदर आने की आज्ञा मांगी। फिर उनके पास अंदर गए तो उन्हें देखा कि बैठी हुई रो रही थीं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो कहा : उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो आप रज़ियल्लाहु अन्हा को सलाम कहते हैं और अपने दोनों साथियों के साथ दफ़न होने की आज्ञा मांगते हैं। हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि मैं ने इस जगह को अपने लिए रखा हुआ था लेकिन आज में अपनी ज़ात पर उनको मुक़द्दम करूँगी। जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो लौट कर आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा गया कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आ गए हैं। उन्होंने कहा मुझे उठाओ तो एक व्यक्ति ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को सहारा देकर उठाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा क्या ख़बर लाए हो? अब्दुल्लाह ने कहा अमीरुल मौमेनीन वही जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो पसनद करते हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आज्ञा दे दी है। कहने लगे अलहमदु लिल्लाह इस से बढ़कर और किसी चीज़ की मुझे फ़िक्र नहीं थी। जब मैं मर जाऊं तो मुझे उठा कर ले जाना। फिर सलाम कहना और यह कहना कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो आज्ञा मांगता है। यदि उन्होंने मेरे लिए आज्ञा दी तो मुझे अन्दर हुजरे में तदफ़ीन के लिए ले जाना और यदि उन्होंने मुझे लौटा दिया तो फिर मुझे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में वापस ले जाना। उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा आईं और दूसरी महिलाएँ भी उनके साथ आएं। जब हमने उनको देखा तो हम चले गए। वह उनके पास अन्दर गईं और कुछ देर उनके पास रोती रहीं। फिर जब कुछ मर्दों ने अंदरूनी हिस्सा में आने की आज्ञा मांगी तो वह मर्दों के आते ही अंदर चली गईं और हम अंदर से उनके रोने की आवाज़ सुनते रहे। लोगों ने कहा अमीरुल मौमेनीन वसीयत कर दें। किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित कर जाएं। उन्होंने कहा में इस ख़िलाफ़त का हक़दार उन कुछ लोगों में से बढ़कर और किसी को नहीं पाता कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी हालत में फ़ौत हुए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन से राज़ी थे। और उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम लिया और कहा अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो तुम्हारे मध्य मौजूद रहेगा लेकिन इस अमर अर्थात ख़िलाफ़त में इस का कोई हक़ नहीं होगा। यदि ख़िलाफ़त साद रज़ियल्लाहु अन्हो को मिल गई तो फिर वही ख़लीफ़ा हो अन्यथा जो भी तुम में से अमीर बनाया जाए वह साद रज़ियल्लाहु अन्हो से सहायता लेता रहे क्योंकि मैंने उनको इसलिए माज़ूल नहीं किया था कि वह किसी काम के करने से आजिज़ थे और न इसलिए कि कोई ख़ियानत की थी। तथा फ़रमाया में इस ख़लीफ़ा को जो मेरे बाद होंगे पहले मुहाजिरीन के बारे में वसीयत करता हूँ कि वे उनके हुक़ूक़ उनके लिए पहचानें। उनकी इज़्ज़त का ख़्याल रखें। मैं अंसार के विषय में भी भलाई की वसीयत करता हूँ जो मदीना में पहले से रहते थे और मुहाजिरीन के आने से पहले ईमान क़बूल कर चुके थे। जो उनमें से नेक काम करने वाला हो उसे क़बूल किया जाए और जो उन में से क़सूरवार हो उस से दरगुज़र किया जाए और मैं सारे शहरों के बाशिंदों के साथ उम्दा व्यवहार करने की उनको वसीयत करता हूँ क्योंकि वह इस्लाम के आश्रय हैं और माल के हुसूल का माध्यम हैं और दुश्मन के कुढ़ने का कारण हैं और यह कि उनकी रजामंदी से उनसे वही लिया जाए जो उनकी जरूरतों से बच जाए। और मैं इस को बदवी अरबों के साथ नेक व्यवहार करने की वसीयत करता हूँ अर्थात आइन्दा के ख़लीफ़ा को क्योंकि वह अरबों की जड़ हैं और इस्लाम का माद्दा हैं यह कि उनके अम्वाल में से जो ज़ायद है वह लिया जाए और फिर उनके मुहताजों को लौटाया जाए और मैं इस को अल्लाह के ज़िम्मा और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िम्मा की वसीयत करता हूँ कि उनके ओहदों को उनके लिए पूरा किया जाए और उनकी हिफ़ाज़त के लिए जंग की जाए और उनकी ताक़त से अधिक उन पर बोझ न डाला जाए। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हो गए तो हम उनको लेकर निकले और पैदल चलने लगे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को अस्सलामो अलैकुम कहा और कहा उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो आज्ञा मांगते हैं। उन्होंने कहा कि उनको अंदर ले आओ। इसलिए उनको अंदर ले जाया गया और वहां उनके दोनों साथियों के साथ रख दिए गए। जब उनकी तदफ़ीन से फ़राग़त हुई तो वे आदमी जमा हुए जिनका हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नाम लिया था ताकि चुनाव ख़िलाफ़त का हो सके और फिर वे अगली कार्रवाई हुई।(सही बुख़ारी, किताब अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग ,قصة البيعة والاتفاق على عثمان بن عفان, हदीस 3700) (उम्दतुल क़ारी ,शरह सही बुख़ारी, भाग 16 पृष्ठ 292 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(लुग़तुल हदीस, भाग 1 पृष्ठ 137 बुर्नुस, प्रकाशन नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई.)

अभी यह चल रहा है इस बारे में बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा मैं वर्णन करूँगा। आज जर्मनी का जलसा सालाना भी शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला उसे बाबरकत फ़रमाए। अधिक से अधिक जर्मन अहमदियों को इस से लाभ प्राप्त करने की तौफ़ीक़ दे। दो दिन का यह जलसा है। कल इन शा अल्लाह शाम को उनका जो अंतिम सैशन है इस से मैं ख़त्ताब भी करूँगा जो एम.टी.ए पर यहां के वक़्त के अनुसार तक़रीबन साढ़े तीन बजे दिखाया जाएगा। बाक़ी जलसा जो वहां जर्मनी में हो रहा है इसकी लाईव स्ट्रीमिंग आज से जर्मनों के लिए हो रही है। जर्मन वहां देख सकते हैं तो अधिक से अधिक इस से फ़ायदा उठाएं।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। उनका भी वर्णन कर दूं। पहला जनाज़ा कमरुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला इंडोनेशिया का है। पिछले दिनों दिनों पैंसठ वाढ की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 1972 ई. में उन्होंने पंद्रह साल की उमर में बैअत की और आरंभिक तालीम के बाद अपनी ज़िंदगी ख़िदमत-ए- सिलसिला के लिए वक़्फ़ कर दी। फिर ये दीनी तालीम के लिए पाकिस्तान चले गए। 30 जून 1986 ई. को शाहिद की डिग्री हासिल की और जुलाई 86 ई. में आपका चयन बतौर मुबल्लिग़ हुआ। बड़ी ख़ुश-अल्हानी से और पुरसोज़ आवाज़ में तिलावत क़ुरआन-ए-करीम किया करते थे। निहायत मुख़लिस और पुरजोश ख़ादिम-ए-सिलसिला थे। उनका सिलसिला ख़िदमत का तक़रीबन पैंतीस साल पर आधारित है। उनकी पत्नी कहती हैं कि मुझे कहा करते थे कि आप केवल मुरब्बी की पत्नी नहीं बल्कि आपको जमाअती ख़िदमात में भी आगे होना चाहिए। फिर यह उनके बारे में लिखती हैं कि उनकी ख़िलाफ़त से इताअत और मुहब्बत बहुत नुमायां थी। छोटों बड़ों से बड़ी इज़्ज़त से पेश आती थीं। जब भी किसी अहमदी से बात करते तो हमेशा जमाअत से मुहब्बत और वफ़ादारी की तलक़ीन भी ज़रूर करते और अधिक से अधिक जमाअत की ख़िदमत की तरग़ीब दिलाते। जब भी किसी ग़ैर अहमदी से मिलते तो उसे तब्लीग़ ज़रूर करते और बड़ी मुहब्बत से और दिल से बात करते थे कि दूसरे भी ख़ुश हो जाते। बीमारी में भी फ़ज्र से डेढ़ दो घंटे पहले उठकर तहज्जुद पढ़ते और तिलावत करते। फिर जब तक हिम्मत रही पैदल चल कर मस्जिद भी जाते रहे। उनके बेटे उमर फ़ारूक़ साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया में उस्ताद हैं। वह कहते हैं कि घर में और बाहर भी चलते फिरते कई दफ़ा क़ुरआन-ए-करीम का कोई न कोई हिस्सा ख़ुश-अल्हानी से सुनाते रहते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अनुवाद और नज़र-ए-सानी का काम भी उन्होंने किया था और इस दौरान में विशेषता जब अनुवाद के काम कर रहे होते थे तो क़सीदा बहुत अधिक पढ़ा करते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हालात घटनाएँ सुनाते तो आँखें पुरनम हो जाया करती थीं। कहते हैं अक्सर मुझे अहमदियों के इबतिला और तकालीफ़ और क़ुर्बानियों के बारे में घटनाए सुनाते और अपने ज़ाती अनुभव भी वर्णन करते किस तरह उन्होंने भी तकलीफ़ें उठाई।

छोटे बेटे ज़फरुल्लाह हैं वे कहते हैं आप बुलंद हौसले वाले और बड़ा प्रयास करने वाले इन्सान थे। बहुत सादा ज़िंदगी गुज़ारी। हमेशा क़नाअत पसंदी को प्राथमिकता देते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला जनाज़ा, दूसरा वर्णन है सबीहा हारून साहिबा पत्नी सुलतान हारून ख़ान साहब मरहूम का। पिछले दिनों 73 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। सबीहा हारून साहिबा के ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता साहिब की बैअत से आई थी। उन्होंने ख़ुद तहक़ीक़ कर के अठारह वर्ष की आयु में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की बैअत की थी। फिर उनके दादा ने अपने बेटे के बाद बैअत की। अल्लाह तआला ने उनको तीन बेटों और तीन बेटियों से नवाज़ा। एक बेटे उनके हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के दामाद हैं। उनके बड़े बेटे सुलतान मुहम्मद ख़ान कहते हैं कि मेरी पिताा का सबसे बड़ा बेटा दो साल की उमर में हादिसाती तौर पर वफ़ात पा गया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सालिस ने जनाज़े के अवसर पर फ़रमाया कि अल्लाह तआला तुम्हें उत्तम प्रतिफल बेटा अता करेगा जो ख़ूबसूरत भी होगा और लंबी उमर पाने वाला भी होगा। और उनके पति मलिक सुलतान को फ़रमाया कि इस को मैं तुम्हारे कंधे के साथ जवान खड़ा देख रहा हूँ। फिर उनके बेटे सुलतान अहमद ख़ान कहते हैं कि मेरी ख़ुशक़िसमती है कि बचपन से लेकर अब तक मेरा बहुत वक़्त अपनी माँ के साथ गुज़रा। बहुत ही प्यार करने वाली और ग़लतियों से दरगुज़र करने वाली माँ थीं। कभी किसी की ग़ीबत नहीं करती थीं। उनकी बेटी महमूदा सुल्ताना कहती हैं मेरी पिताा नेक फ़ित्रत, ख़ामोश स्वभाव, आला औसाफ़ की मालिक थीं। सिलसिला की हक़ीक़ी आशिक़ और ख़िलाफ़त से मुहब्बत और वफ़ा की इंतिहा को पहुंची हुई थीं और यही नसीहत करती थीं। ख़ुशखुलक़ और ग़रीबों का ख्याल रखेने वाली थीं। उनकी मेहमान-नवाज़ी पूरे ख़ानदान में प्रसिद्ध थी। किसी की भी दिल-शिकनी नहीं करती थीं। ग़ीबत को सख़्त नापसंद करती थीं और हमें हमेशा इस से बचने की तलक़ीन किया करती थीं। ऐसी महफ़िल जहां ग़ीबत हो रही हो वहां से उठ जातीं और उनके चेहरे पर नागवारी आ जाती। हमेशा दरगुज़र से काम लिया करती थीं। कहती हैं मेरे पिता पर जानी हमला करने वाले दुश्मन को भी कभी बददुआ नहीं दी और हमेशा कहती थीं: मैं दुआ करती हूँ कि अल्लाह उनको हिदायत दे। बीमार मरीज़ों के लिए विशेष नरमी अपने दिल में रखती थीं और उनकी इस तरह सहायता करती थीं कि बाएं हाथ को भी ख़बर न हो। उनकी दूसरी बेटी वजीहा साहिबा कहती हैं कि एक ख़ामोश स्वभाव शख़्सियत की मालिक थीं। बहुत अधिक सदक़ा-ओ-ख़ैरात करने वाली थीं और सदक़ा-ओ-ख़ैरात ख़ामोशी से किया करती थीं और इस का वर्णन अधिक पसंद नहीं फ़रमाती थीं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-23)

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

रेडीयो NDR का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार मेहमानों की सेवा में डिनर प्रस्तुत किया गया। डिनर के तुरंत बाद रेडीयो NDR के एक लेखक प्रतिनिधि ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल का इंटरव्यू लिया।

लेखक ने प्रश्न किया कि धार्मिक सहिष्णुता और बर्दाश्त के सम्बन्ध में जिन इस्लामी शिक्षाओं के बारे में आपने वर्णन किया है, सऊदी अरब और संसार में उपस्थित दूसरे मुस्लमान इन शिक्षाओं पर अनुकरण क्यों नहीं करते।

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरा काम तो केवल इस्लाम की हक़ीक़ी वास्तविक शिक्षाओं को प्रस्तुत करना है। मैं किसी पर ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकता या किसी को मजबूर तो नहीं कर सकता। और जहां तक हमारी जमाअत का सम्बन्ध है तो मैं हमेशा उन्हें कहता हूँ कि इस्लाम की असल और सुन्दर शिक्षाओं पर कार्यरत रहें। मैं जहां भी जाता हूँ या जहां भी मुझे कुछ कहने का अवसर मिलता है तो मैं उनसे यही चीज़ कहता हूँ। अत: मैं ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकता परन्तु प्रत्येक जगह यही संदेश देता हूँ कि इस्लाम का नाम बदनाम मत करो। बल्कि एक मर्तबा तो मैं ने उन्हें सीधे संबोधित करके भी कहा है कि इस्लाम का नाम बदनाम मत करो। इस्लाम तो अमन का धर्म है। ख़ुदा अपने धर्म की ख़ातिर अपने व्यक्तिगत् लाभ को प्राप्त करने के बजाय असल इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण करो।

इस के बाद इस प्रतिनिधि लेखक ने पूछा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का जर्मनी में जमाअत अहमदिया के भविष्य के बारे में क्या विचार है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यहां जर्मनी में जमाअत बहुत काम करने वाली है। नौजवान वर्ग पढ़ा लिखा है। हमारे जो बच्चे स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं इन में पर्याप्त ज़हीन और योग्य विद्यार्थी हैं। इसी तरह नौजवानों की एक कसीर संख्या यूनीवर्सिटीयों से ग्रैजूएशन और मास्टर्ज़ कर रही है और कुछ पी एच डी और रिसर्च भी कर रहे हैं। हम अपने नौजवानों को यही कहते हैं कि दुनियावी ज्ञान बढ़ाने के साथ-साथ अपने बुनियादी कर्तव्य अर्थात अपने स्रष्टा को पहचानने और इस की शिक्षाओं और अहकामात पर अनुकरण करना न भूलें।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना की मारकी में तशरीफ़ ले गए जहां महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य पाया और अपने आक़ा को देखा और बच्चियों के समूहों ने दुआओं वाली नज़्में और तराने प्रस्तुत किए और अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ लजना की मारकी से बाहर पधारे तो बच्चे एक लाइन में खड़े हो चुके थे। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चों को भी चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले गए जहां लोकल इंतिज़ामिया और वक़ारे अमल करने वाले ख़ुद्दाम, अंसार और जर्मन मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद से बाहर पधारे और इस अवसर पर उपस्थित, इस समारोह में शामिल होने वाले जमाअत के लोगों को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा। (शेष आगे)

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 3 -10 सितम्बर 2015)

9 जून 2015 ई. दिन मंगल (शेष भाग)

ओसना ब्रूक के लिए रवानगी

अब प्रोग्राम के अनुसार यहां से ओसना ब्रूक (OSNABRUK) के लिए प्रस्थान था। आठ बजकर पैंतालिस मिनट पर हुज़ूर अनवर ने इजतिमाई दुआ करवाई और क़ाफ़ला जमाअत ओसना ब्रूक के लिए रवाना हुआ। VECHTA से ओसना ब्रूक की दूरी साठ किलोमीटर है । लगभग पैंतालिस मिनट के यात्रा के बाद साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद बिशारत ओसना ब्रूक तशरीफ़ आवरी हुई। स्थानीय जमाअत के लोग पुरुषों महिलाओं, जवान बूढ़े और बच्चे बच्चियों ने बड़े जोश के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। लोगों ने नारे बुलंद किए और बच्चे बच्चियों ने दुआइया और इस्तिक़बालिया गीत प्रस्तुत किए। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहि अज़ीज़ लगाड़ी से बाहर पधारे तो रीजनल अमीर आदरणीय इश्तियाक़ अहमद साहब, लोकल सदर जमाअत राना हफ़ीज़ अहमद साहब और रीजनल मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीय मुस्तंसर अहमद साहब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और मिशन हाऊस के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बिशारत पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बिशारत ओसना ब्रूक जर्मनी में सौ मस्जिदें की बनने के मन्सूबा के तहत बनने वाली आरम्भिक मस्जिदों में से है। इस का उद्घाटन 2001 में हुआ था। दो मीनारों के साथ मस्जिद बिशारत बहुत सुन्दर दिखाई देती है। इस में रिहायशी हिस्से के अतिरिक्त स्थानीय जमाअत का दफ़्तर भी है और लाइब्रेरी भी है और जमाअती किचन इत्यादि की सहूलत भी प्राप्त है।

26 सितम्बर 2005 ई. दिन सोमवार KIEL जर्मनी से नन स्पीट (हॉलैंड) जाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बिशारत में कुछ देर के लिए क़ियाम फ़रमाया था और जुहर तथा अस्र की नमाज़ें जमा करके पढ़ाई थीं।

11 अक्तूबर 2011 ई. दिन मंगल हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने हिमबर्ग (जर्मनी) से नन स्पीट जाते हुए रास्ते में मस्जिद बिशारत में कुछ देर के लिए क़ियाम फ़रमाया था और नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई थीं।

फिर 4 दिसंबर 2012 ई. दिन मंगल हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने (बेल्जियम से हिमबर्ग) जर्मनी जाते हुए रात मस्जिद बिशारत ओसना ब्रूक में क़ियाम फ़रमाया था। नमाज़ मग़रिब और ईशा और अगले रोज़ नमाज़-ए-फ़ज्र यहां पढ़ाई थी।

और अब 9 जून 2015 ई. दिन मंगल हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ्रैंकफ़र्ट (जर्मनी) से वापस लंदन जाते हुए चौथी मर्तबा मस्जिद बिशारत में क़ियाम फ़रमाया था। इस बार भी हुज़ूर अनवर का एक रात के लिए यहां क़ियाम था

हुज़ूर अनवर का भाषण सुनकर मेहमानों के विचारों।

मस्जिद बैयतुल-क़ादिर के उद्घाटन के समारोह के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जो भाषण फ़रमाया उस का मेहमानों पर गहरा प्रभाव हुआ और कुछ मेहमानों ने बरमला अपनी भावनाओं और विचारों का प्रकटन भी किया।

एक मेहमान ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि

ख़लीफतुल मसीह जैसे अज़ीम व्यक्तित्व ने माज़रत करके हमारे दिल जीत लिए हैं। यह केवल अहमदियों का ही ख़लीफ़ा नहीं बल्कि हमारा भी ख़लीफ़ा है। हम सब का ख़लीफ़ा है।

एक मेहमान ने कहा ख़लीफतुल मसीह ने बाक़ी स्पीकर्ज़ की बातों को लेकर उनके बारे में इस्लामी शिक्षा का वर्णनकरके उनकी बातों को एक ताज पहना दिया है।

पड़ोसी में रहने वाली एक महिला जो बिल्कुल सड़क के दूसरी ओर रहती हैं उन्होंने कहा कि मस्जिद की बनने से पहले मैं जमाअत को नहीं जानती थी और मेरा यह पहला अवसर है कि मुझे आज इस्लाम का एक बिल्कुल नया चेहरा देखने को मिला जिसका मुझे पहले पता ही नहीं था क्योंकि मैं आप लोगों को नहीं जानती थी।

उन्हों ने कहा आपके ख़लीफ़ा को देखकर लगा कि जैसे वह हमारे अपने हैं। वह बहुत दिल मोह लेने वाली व्यक्ति हैं। उनके अंदर इन्सानियत की तड़प नज़र आई। वह अजनबियों की तरह नहीं बोल रहे थे बल्कि लग रहा था जैसे वह हम में से हैं।

एक और वृद्ध, व्यक्ति जो इस समारोह में शामिल हुए उन्होंने कहा कि

"ठीक है। हमें थोड़ा बहुत इंतिज़ार तो करना पड़ा परन्तु आपके ख़लीफ़ा ने जिस तरह हमारा शुक्रिया अदा किया और जिस तरह माज़रत का प्रकटन किया वह बहुत ही प्यारा ढंग था। हम सारा इंतिज़ार भूल गए।"

उन्हों ने कहा कि यदि पोप इस तरह के समारोह में ताख़ीर से आते तो वह कभी माज़रत न करते। शायद उन्हें माज़रत करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती परन्तु दूसरी ओर हुज़ूर जो एक मुक़द्दस व्यक्तित्व हैं ने माज़रत की जो निश्चित आपकी अज़मत की दलील है। जूंही हुज़ूर ने माज़रत के शब्दों कहे हम सब के चेहरे उठे।

एक रेडीयो के प्रतिनिधि जो इस समारोह में उपस्थित थे वह कहने लगे कि जब आप लोगों के ख़लीफ़ा पधारे तो मेरा सारा शरीर काँप उठा। हुज़ूर से एक अजीब नूर फूट रहा था। हुज़ूर की ओर से ख़ास रोशनी दिखाई दी।

इस समारोह में शामिल एक जर्मन महिला ने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए वर्णन किया हुज़ूर ने अपनी तक़रीर में अफ्रीक़ा के बारे में जो बातें वर्णन कीं वह बिल्कुल सच्च हैं। हुज़ूर जब अफ्रीक़ा में पानी की तकलीफ़-दह स्थिति वर्णन कर रहे थे तो मैं सुनकर काँप उठी थी। और जब इसी समारोह में मुझे पानी प्रस्तुत किया गया तो हुज़ूर अनवर के शब्द सुनकर अफ्रीक़ा में उपस्थित ग़रीबों की जो कल्पना ज़हन में आ रही थी उसे महसूस करके मेरे लिए पानी पीना मुश्किल हो रहा था।

एक स्कूल की हैड मिस्ट्रेस जो इस समारोह में बतौर मेहमान शामिल थीं उन्होंने कहा मैं पोप से भी मिलने गई थी परन्तु आज का दिन मेरे जीवन का बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण दिन था जो मैंने ख़लीफ़ा को देखा। ख़लीफ़ा ने मेरा दिल जीत लिया है।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ महिलाओं की मारकी में तशरीफ़ ले गए तो वे भी हुज़ूर को देखने के लिए लजना की मारकी में गईं। इस अवसर पर और भी ग़ैर अहमदी जर्मन महिलाएं हुज़ूर अनवर को देखने के लिए दौड़ते हुए लजना की मारकी की ओर गईं और उनमें से कुछ महिलाओं की आँखों में ख़ुशी और प्रसन्नता के आंसू थे।

Vechta शहर में इमारात की मंज़ूरी देने वाले विभाग के इंचार्ज जिन्हों ने हमारी मस्जिद के बनने की भी मंज़ूरी दी थी वह भी इस समारोह में शामिल थी। वह अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहने लगीं।

आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर आश्चर्यचकित थी। अमन का संदेश और विशेषता हुज़ूर अनवर का यह फ़रमाना कि मुल्क से वफ़ादारी और मुल्क की प्रगति में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना और किसी रंग-ओ-नसल के भेद भाव के बिना इन्सानियत की सेवा करना बहुत ही आला बातें थीं जो न केवल मेरे लिए ख़ुशी का मूजिब हैं बल्कि इन बातों ने मुझे हैरत में डाल दिया है कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे देश के लिए ऐसे आला ख़्यालात रखता है।

Vechta जमाअत के सदर साहब वर्णन करते हैं कि हमारी जमाअत के एक मित्र इस समारोह में शामिल होने वाले मेहमानों को अगले दिन जब मिठाई देने गए तो एक पति पत्नी ने बताया कि जब हम दोनों वापस घर आए तो रात देर तक हमारे सामने आपके ख़लीफ़ा का चेहरा बार-बार रहा।

इसी तरह मस्जिद बैयतुल-क़ादिर का नक़्शा बनाने वाले आर्कीटेक्ट कहने लगे कि

मैं तो इस समारोह में ऐसा महव हो गया कि मुझे समय का बिल्कुल भी पता नहीं चला। ऐसा लग रहा था कि में कोई अत्यधिक दिलचस्प फ़िल्म देख रहा हूँ। हुज़ूर अनवर के भाषण ने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा है।

वह कहने लगे कि अगर Vechta में आप लोगों को कोई तंग करे तो मुझे ज़रूर बताईएगा मैं आप लोगों की सहायता करूँगा।

इसी तरह एक फ़िलोसफ़ी के उस्ताद भी इस समारोह में शामिल हुए। उन्होंने बताया कि

हुज़ूर अनवर ने मस्जिद में प्रयोग होने वाले पत्थर की उदाहरण देते हुए जो यह नसीहत की कि आप लोगों के दिल पत्थर नहीं बनने चाहिऐं बल्कि ऐसे दिल हों जिनसे चश्मे फूट रहे हों यह बात मुझे बहुत आई।

हमारे कुछ अहमदी विद्यार्थी उनसे पढ़ते हैं उन्हों ने बताया कि अगले रोज़ क्लास में उस टीचर ने लगभग पाँच मिनट तक समस्त विद्यार्थियों को मस्जिद के उद्घाटन समारोह के हवाला से बताया और जमाअत की प्रशंसा की

इस समारोह के बाद जब लोगों जमाअत की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ फ़ोटो बनवाने की दरख़ास्त की। इन जर्मन लोगों के चेहरों से मुहब्बत और अक़ीदत नज़र आ रही थी। सात, आठ जर्मन मेहमानों के इस ग्रुप में एक वायस मेयर, एक डाक्टर और कुछ अन्य आला आफ़िसरान भी थे।

इसी तरह समारोह में शामिल बहुत से मेहमानान ने प्रकटन किया कि यह उन की ख़ुशक़िसमती थी कि वह इस प्रोग्राम में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि इस में कोई शक नहीं कि हुज़ूर अनवर अमन के सफ़ीर हैं और एक पुरशोकत इन्सान हैं। इन्सानियत से बहुत क़रीबी और गहरा सम्बन्ध है। हुज़ूर के भाषण से बे-इंतिहा विश्वास मिला। इस में कोई शक नहीं कि हुज़ूर संसार में मौजूदा समस्याओं को बहुत गहराई से देखते हैं और फिर उनका हल बताते हैं।

लोकल जमाअत के सदर साहब वर्णन करते हैं कि हमने इस समारोह से पूर्व लोकल प्रैस से सम्पर्क किया था परन्तु हमें उम्मीद नहीं थी कि इस क़दर अच्छी कवरेज होगी। परन्तु ख़ुदा तआला ने समय के ख़लीफा के बाबरकत व्यक्तित्व के कारण से ऐसी हवा चलाई कि समारोह के अवसर पर हमारी उम्मीदों के विपरीत प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के लोग पहुंच गए। जर्मनी का एक बहुत बड़ा टीवी चैनल Sat-1 है और इस के बारे में गुमान भी नहीं था कि वह आएँगे परन्तु उनका प्रतिनिधि आया और उद्घाटन के हवाला से टीवी पर ख़बर प्रसारित हुई। इसी तरह सूबे के चैनल NDR ने भी इस प्रोग्राम की ख़बर प्रसारिति की। रेडीयो में भी इस समारोह के हवाला से बार-बार ऐलान हुआ। विभिन्न अख़बारों ने इस मस्जिद के बनने के हवाला से नुमायां ख़बरें और आर्टीकलज़ भी प्रकाशित किए। हुज़ूर अनवर की तक़रीर के कुछ हिस्से बहुत सकारात्मक रंग में quote किए गए। इस तरह लाखों लोगों तक जमाअत अहमदिया का परिचय पहुंचा।

मस्जिद बैयतुल उल-क़ादिर (Vechta) के उद्घाटन और मस्जिद दार अस्सलाम (Iserlohen) की नींव के पत्थर के हवाला से होने वाली तक़ारीब की मीडिया में कवरेज।

अख़बार Oldenburgische Volkszeitung में मस्जिद बैयतुल-क़ादिर के उद्घाटन के हवाला से निमंलिखित ख़बर प्रकाशित हुई।

"ख़लीफ़ा Vechta में नई मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं आज अहमदिया जमाअत जश्न मना रही है "

प्रधान का भाषण दुनिया-भर में प्रसारित हो रहा है। यह इस्लामी तंज़ीम अपना

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

एक टैलीविज़न चैनल चला रही है। नई इमारत का ख़र्चा चन्दों के माध्यम उठाया गया।

Vechta नई इमारत के दफ़्तर में एक तख़्ती पड़ी हुई है जिस पर तहरीर है "मस्जिद बैयतुल-क़ादिर" इस का अनुवाद है "क़ादिर-ए-मुतलक़ का घर" इस्लाम अहमदिया जमाअत के सदस्य इस तख़्ती को बाहरी दीवार पर लगाएंगे।

पांचवें ख़लीफ़ा, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, मस्जिद का उद्घाटन करेंगे। उन्होंने इस से पूर्व अक्तूबर 2011 में स्वयं इस मस्जिद की नींव का पत्थर रखा था।

इस मस्जिद में महिलाओं और मर्दों के लिए अलग-अलग दो 65 मुरब्बा मीटर के नमाज़ के कमरे हैं। अतिरिक्त इसके इमारत में दो दफ़ातिर, दो ग़ुस्ल-ख़ाने साथ शौचालय और एक लाइब्रेरी के साथ मल्टी परपस हाल भी है।

इसी अख़बार Oldenburgische Volkszeitung के 9 जून 2015 ई. के शुमारे में मस्जिद बैयतुल-क़ादिर के उद्घाटन के हवाला से निमंलिखित ख़बर प्रसारित हुई।

Vechta के अहमदी मुस्लमानों के लिए आज एक महान दिन है। यह दुनिया-भर में फैली हुई इस्लामी तंज़ीम, ज़िला के केंद्री शहर में एक नई मस्जिद का उद्घाटन कर रही है। नसीर बट, जो कि Vechta में 154 अहमदियों के सदर हैं उन्होंने इस अवसर पर सयासी और ग़ैर सयासी मेहमानों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि वह जल्द ही मस्जिद में एक open day के लिए बुलाने का का इरादा भी रखते हैं।

इसी अख़बार Oldenburgische Volkszeitung ने 10 जून 2015 ई. की प्रकाशन में बैयतुल उल-क़ादिर के हवाला से उद्घाटन की ख़बर देते हुए लिखा।

ख़लीफ़ा साहब Vechta में मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं।

अहमदी मुस्लमानों ने अपने प्रधान और 150 से अधिक मेहमानों के साथ उद्घाटन समारोह आयोजित किया

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रधान ने कल शाम Vechta में एक नई मस्जिद का उद्घाटन किया। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने जमाअत के सदस्यों को तलक़ीन की कि अब पहले से ज़्यादा समाजी प्रगति की ओर ध्यान दें। ख़लीफ़ा ने मेहमानों के सामने जिनकी संख्या 150 के क़रीब थी और उनमें विभिन्न वर्गों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों शामिल थे प्यार फैलाने और दूसरे धर्मों से सहिष्णुता से प्रस्तुत आने की शिक्षा प्रस्तुत की। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के अनुसार इस जमाअत के कई मिलियन समर्थक हैं और Vechta में उनकी संख्या 154 है।

इस अख़बार ने ख़बर के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तस्वीर भी प्रकाशित की जिस में शहर के मेयर Claus Dalinghaus हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में एक भेंट प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसी अख़बार ने "ख़लीफ़ा साहब ने धर्मों के मध्य सहिष्णुता से प्रस्तुत आने की तलक़ीन की" के शीर्षक से मज़ीद तफ़सील वर्णन करते हुए एक और ख़बर प्रकाशित की कि :

अहमदी मुस्लिम जमाअत के दुनिया-भर के प्रधान ने मुस्लमानों को इस ओर ध्यान दिलाया कि वे integrate हों।

150 से अधिक मेहमान Vechta की मस्जिद के उद्घाटन पर पधारे। इस मस्जिद का नाम क़ादिर-ए-मुत्लक ख़ुदा का घर है।

अहमदी मुस्लमान उस दिन के मुंतज़िर थे। वे नारों से मिर्ज़ा मसरूर अहमद का स्वागत कर रहे हैं। बच्चे गीत गा रहे हैं और साथ झंडे लहरा रहे हैं। खलीफ़तुल मसीह मस्जिद की बाहरी दीवार पर लगी हुई तख़्ती से पर्दा हटा रहे हैं। इस तख़्ती पर "मस्जिद बैयतुल-क़ादिर" लिखा है। अर्थात "क़ादिर-ए-मुतलक़ का घर" इस के बाद ख़लीफ़ा नमाज़ के लिए मस्जिद तशरीफ़ ले गए।

खलीफ़तुल मसीह की मौजूदगी ही इस मस्जिद के उद्घाटन का महत्व प्रकट कर रही थी। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद को बहुत ख़ुशी हुई कि 150 मेहमान जिनका सम्बन्ध सियासत, चर्च इत्यादि से था इधर पधारे। उन्होंने कहा "आप सब का इस जगह पधारना, अतिरिक्त इस के कि आप अहमदी नहींहैं, आपकी सहिष्णुता को प्रकट करता है।"

अहमदी सदस्यों को उन्होंने इस ओर ध्यान दिलाया कि पहले से बढ़ कर समाज की प्रगति में हिस्सा लें। खलीफ़तुल मसीह ने अपनी तक़रीर में कहा यदि आप लोग इस प्रगति में शामिल नहीं होंगे तो इस का अर्थ है आप integrate नहीं हुए। इस मुल्क से वफ़ादारी आपके धर्म का हिस्सा है।

खलीफ़तुल मसीह ने धर्मों के मध्य मुहब्बत और सहिष्णुता से प्रस्तुत आने की भी नसीहत की। उन्होंने कहा "हर धर्म प्यार और मुहब्बत की शिक्षा लेकर आया है परन्तु इन्सानों ने इस शिक्षा को बिगाड़ दिया है। हम ने पत्थरों से मस्जिद तो बनाई है परन्तु हमारे दिल पत्थरों की तरह सख़्त नहीं होने चाहिऐं।"

शहर के मेयर Claus Dalinghaus और एम. पी ए Dr. Stephan Siemer ने भी इस उद्घाटन के बारे में ख़ुशी का प्रकटन किया।

इस ख़बर के साथ भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तस्वीर प्रकाशित हुई जिस में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दुआ करवा रहे हैं।

यह अख़बार Oldenburgische Volkszeitung प्रतिदिन प्रकाशित होने वाली अख़बार है और इसकी 306.21 की संख्या में सरकुलेशन है।

एक अख़बार Osnabrucker Zeitung ने अपने 9 जून 2015 ई. के प्रकाशन में मस्जिद बैयतुल क़ादिर के हवाले से उद्घाटन की ख़बर देते हुए लिखा :

Niedersachsen में एक मुस्लिम जमाअत ने एक नई मस्जिद का उद्घाटन किया। अहमदिया मुस्लिम जमाअत की इमारत के दो 9 मीटर बुलंद मीनार हैं और एक गुम्बद है।

इस ख़ुशी के अवसर पर जमाअत अहमदिया के रुहानी प्रधान मिर्ज़ा मसरूर अहमद भी शामिल हुए। जर्मनी भर में इस जमाअत की 47 मस्जिदों और 37 हज़ार सदस्य हैं। Niedersachsen के सूबा में उनकी मस्जिदें Stade Osnabruck Hannover और Bremen में उपस्थित हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत अपने आपको एक इस्लाही तंज़ीम समझती है। सन 1889 ई. में इस जमाअत की हिंदुस्तान में बुनियाद रखी गई।

Vechta शहर के डिप्टी मेयर ने कहा कि "सत्कार, सहिष्णुता और कुशादगी से प्रस्तुत आने से समस्त द्वेष दूर किए जा सकते हैं और सब इसी तरह अमन से इकट्ठे रह सकते हैं।"

(यह अख़बार Osnabrucker Zeitung प्रतिदिन प्रकाशित होने वाला अख़बार है और 159510 की संख्या में इस अख़बार की सरकुलेशन है।

इसी तरह Iserlohn की मस्जिद बैयतुल सलाम के नींव के पत्थर के अवसर पर WDR ने अपनी वेबसाइट पर ख़बर प्रसारित की। WDR जिस सूबा में मस्जिद स्थित है इस का बहुत पुराना और महत्वपूर्ण ज़िला टेलीविज़न है। 1956 ई. से यह चैनल चल रहा है। इस चैनल ने ख़बर देते हुए कहा :

"मंगल के दिन Iserlohn की मस्जिद का नींव का पत्थर रखा गया जो कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत की मस्जिद है। इस मस्जिद के गुम्बद का क़तर 8 मीटर होगा और इस का मीनार बारह मीटर का होगा। जमाअत के सदस्य अत्यधिक ख़ुशी महसूस कर रहे हैं कि अब मस्जिद की नींव का पत्थर रखा गया"

2010 ई. में जमाअत अहमदिया जर्मनी ने मस्जिद बनाने की दरख़ास्त दी। उस समय विरोध हुआ परन्तु मुख़ालिफ़ीन की संख्या कम रही। अदालती कार्यवाही का भी प्रयास किया गया परन्तु उसे भी रद्द कर दिया गया।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लोगों Iserlohn को अपना वतन समझते हैं। वह दूसरे धर्मों को भी दावत देते हैं और अमन की शिक्षा प्रस्तुत करते हैं।

मस्जिद के अख़राजात मुकम्मल तौर पर चन्दों से उठाए जाऐंगे

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 18-25 November 2021 Issue No.46-47

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2 का शेष

इन शब्दों की तहरीफ़ मुख़ालिफ़ीन इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में कर रहे थे। अगर ख़ुदा तआला का वादा, और हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि की तरफ़ से समय पर क़ुरआन की हिफ़ाज़त की कार्रवाई न की जाती तो न मालूम क़ुरआन-ए-मजीद के ख़िलाफ़ क्या-क्या करते।

तौरेत में परिवर्तन के उदाहरण

यहूद तथा इसाइयों ने तौरेत किताब मुक़द्दस पुराना और नया अहदनामा में किस तरह परिवर्तन किया उसकी केवल एक उदाहरण नीचे वर्णित है

(1)तौरेत के बारे में यह आस्था है कि यह हज़रत मूसा अलैहिस्सालम पर नाज़िल हुई। अब जो किताब मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। इस में नीचे लिखी इबारत की वृद्धि किस ने कर दिया कि ?

" अत: ख़ुदावंद के बंदा ने ख़ुदावंद के कहे के अनुसार वहीं मूआब के देश में वफ़ात पाई और मूसा अपनी वफ़ात के समय एक सौ बीस वर्ष का था।"

(इस्तिस्ना,बाब 34 आयत 7)

ऊपर वाली इबारत बता रही है कि यह मूसा अलैहिस-सलाम के बाद बढ़ाई गई इबारत है। वर्ना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने देहान्त के बाद ख़ुद यह कैसे कह सकते थे कि इन की उम्र 120 साल की थी।

मुख़ालिफ़ीन इस्लाम की कोशिशें होती हैं कि क़ुरआन-ए-मजीद को भी परिवर्तित कर दिया जाए। परन्तु अल्लाह तआला की दी हुई तौफ़ीक़ के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि के साहस और समय पर उठाए गए क़दमों ने क़ुरआन-ए-मजीद को हर परिवर्तन से सुरक्षित रखा। अल्हम्दुलिल्लाह।

अत: अल्लाह तआला ने इतनी महान हफ़ाज़त का प्रबन्ध करवा कर यह सबूत दिया कि अल्लाह तआला हर ज़माना में क़ुरआन-ए-मजीद की शाब्दिक,आर्थिक,देनी और रुहानी हिफ़ाज़त के लिए अपना वादा اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ पूरा करता चला जाएगा। इंशाअल्लाह

(एतराज़ नंबर 5) आरोप लगाने वाले ने शंका पैदा करने के लिए एक आरोप यह किया कि हज़रत अली ने क़ुरआन-ए-मजीद को ठीक कर लिया।

जवाब: यह अल्लाह तआला के वादा اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ के विरुद्ध है और अल्लाह तआला ने ऐसा कभी नहीं होने दिया यह हज़रत सय्यदना अली रज़ि की तरफ़ ग़लत बात सम्बन्धित की जा रही है। अगर यह ठीक करने वाली बात सही होती तो आरोप लगाने वाले नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दे।

(1) आरोप लगाने वाले के कथन के अनुसार अगर हज़रत अली रज़ि ने क़ुरआन को ठीक कर लिया था तो वे देश जहां पर शीया हुकूमत में थे या हैं वे हज़रत अली रज़ि का छीक किया हुआ क़ुरआन की प्रति क्यों प्रकाशित नहीं करते बल्कि हम देखते हैं कि ईरान और दूसरे शीया संस्थाएं वही क़ुरआन प्रकाशित करते, पढ़ते और पढ़ाते हैं जो अहले सुन्नत वालों के पास है।

(2)सय्यदना हज़रत अली रज़ि शेरे ख़ुदा और चौथे ख़लीफ़ा ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में छीक किए हुए क़ुरआन को प्रचिलित क्यों नहीं किया और मुस्लमानों को यह क्यों न कहा कि तुम्हारे हाफ़िज़े में जो क़ुरआन है वह भुला कर के यह छीक किया हुआ क़ुरआन हिफ़्ज़ करो ऐसी कोई रिवायत हमें तारीख़ इस्लाम में नहीं मिलती। अत: यह आरोप बहुत ग़लत और झूठा है असल वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ने जिस क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुद क़बूल की है उसने उसे हर परिवर्तन से सुरक्षित रखा है और क़यामत तक उसे महफ़ूज़ रखेगा। इंशा अल्लाह तआला

(एतराज़ नम्बर 6) क़ुरआन-ए-मजीद के अनुवाद और तफ़सीर में मुस्लमानों का मतभेद है और उन ग़लत व्याख्याओं का लाभ बुनियाद परस्त और दहशतगर्द उठा रहे हैं जो इन्सानियत के लिए ख़तरनाक है।

जवाब: अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया है اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ(सूरत यूसुफ़ नम्बर 3)कि हम ने क़ुरआन-ए-मजीद को सारगर्भित और स्पष्ट अरबी ज़बान में नाज़िल किया है और यही अल्लाह की वाणी है

अब रहा सवाल यह कि इस की ग़लत व्याख्याओं से बुनियाद परस्त और उग्रवादी लाभ उठा रहे हैं तो यह ग़लती ग़लत व्याख्या करने वालों और फ़ायदा उठाने वालों को न रोकने वालों की है न कि क़ुरआन-ए-मजीद की।!

अगर कोई मुल्की क़ानून और दस्तूर की किसी शक की ग़लत व्याख्या कर के लोगों को धोखे में डाले तो दोष धोखा में डालने वालों का है न कि क़ानून का।

आरोप लगाने वाले की तरह अगर कोई यह मांग करे कि क़ानून और विधि से इस अनुच्छेद को ख़त्म कर दिया जाए क्योंकि इस शक से कुछ लोग धोखा देने की कोशिश करते हैं तो क्या उस की मांग स्वीकार योग्य होगी।?? हरगिज़ नहीं

इस को एक दूसरे उदाहरण के माध्यम से इस तरह भी समझा जा सकता है कि उदाहरण के तौर पर कोई मूर्ख और अज्ञान मुस्लमानों को यह कहे कि क़ुरआन-ए-मजीद में साफ़ तौर पर लिखा है لَا تَقۡرَبُوا الصَّلٰوةَ(सूरत अन्निसा,आयत नम्बर 44) और दूसरी जगह लिखा है: فَوَيۡلٌ لِّلۡمُصَلِّيۡنَ (सूरत अल माऊन, आयत नम्बर 5) अर्थात नमाज़ के क़रीब न जाओ और जो जाएगा उस के लिए हलाकत है। अत: मुस्लमानों को नमाज़ अदा नहीं करनी चाहिए। अब अगर कोई दूसरा जाहिल उठ कर यह मांग करे कि क़ुरआन-ए-मजीद की इन दो आयतों को ख़ुदा न करे निकाल दिया जाए क्योंकि उसके द्वारा मुस्लमानोंको धोका दिया जा रहा है तो क्या यह मांग ठीक होगी।

अत: इन दो उदाहरणों से समझा जा सकता है कि आरोप लगाने वाले के आरोप ग़लत और निराधार और हक़ीक़त पर आधारित नहीं हैं।

(शेष.....)

पृष्ठ 1 का शेष

लिए है कि वह क़ुरआन-ए-अज़ीम का हिस्सा है इस से बाहर नहीं। अनुमानों से उन लोगों के ख़्यालात की तरदीद होती है जो यह ख़्याल करते हैं कि सूर: फ़ातिहा क़ुरआन का हिस्सा नहीं। हदीसों में भी सूरत फ़ातिहा का नाम क़ुरआन अज़ीम बताया गया है। इसलिए मस्नद अहमद हनबल में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया هِيَ اُمُّ الۡقُرۡاٰنِ وَهِيَ السَّبۡعُ الۡمَثَانِيۡ وَهِيَ الۡقُرۡاٰنُ الۡعَظِيۡمُ(मस्नद अहमद हनबल भाग 2, पृष्ठ 448) अर्थात सूर: फ़ातिहा उम्मुउल-क़ुरआन भी है और सबउल मसानी भी है और क़ुरआन अज़ीम भी है।

इस हदीस का यह अर्थ नहीं कि क़ुरआन-ए-अज़ीम सारे क़ुरआन का नाम नहीं। दोनों ही अर्थ एक वक़्त में किए जा सकते हैं क्योंकि एक दूसरे के मुख़ालिफ़ नहीं हैं। यह भी कि सूर: फ़ातिहा क़ुरआन-ए-अज़ीम है और यह भी कि सारा क़ुरआन, क़ुरआन-ए-अज़ीम है क्योंकि ये दोनों अर्थ अलग नुक़्ता निगाह की वजह से हैं और अपनी-अपनी जगह पर दरुस्त हैं। यदि क़ुरआन-ए-अज़ीम के अर्थ सारे क़ुरआन के किए जाएं तो यह मतलब होगा कि हमने तुमको संक्षिप्त क़ुरआन अर्थात सूर: फ़ातिहा भी दी है और इस के अतिरिक्त एक तफ़सीली क़ुरआन भी दिया है। अत: उस की तालीम की तरफ़ तवज्जा करो और उन लोगों से बेहस मुबाहिसा का ख़्याल जाने दो। अब वक़्त आगया है कि मुस्लमानों को मतालिब-ए-क़ुरआन ख़ूब ज़ोर से सिखाया जाएं ताकि वे नए निज़ाम को सँभालने के योग्य हो जाएं।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 4 पृष्ठ 110 प्रकाशन क़ादियान 2010)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad